Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 143 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 23 नवम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

आज धर्म के नाम पर अधर्म का कार्य किया जा रहा है।
Today irreligious act is going on in the guise of religion.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

अधिमान्यता परिचय पत्र नवीनीकरण प्रारंभ

रायपुर (विसं)। जनसंपर्क संचालनालय द्वारा अधिमान्य मीडिया प्रतिनिधियों के अधिमान्यता परिचय पत्र नवीनीकरण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। अधिमान्यता नवीनीकरण हेतु 15 दिसम्बर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन स्वीकार किये जायेंगे। अधिमान्यता नवीनीकरण हेतु जनसंपर्क संचालनालय की वेबसाइट www.dprcg.gov.in एवं https://jansampark.cg.gov.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र की हार्ड कॉपी अपने नवीनतम पासपोर्ट फोटो के साथ संबंधित जिला जनसंपर्क कार्यालय में जमा करना होगा। अधिमान्य पत्रकार अधिमान्यता परिचय पत्र की वैधता अवधि जारी परिचय पत्र के पीछे अंकित वैधता तिथि से ज्ञात कर सकते हैं।

पाकिस्तान में फिर आतंकी हमला, 38 की मौत

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में आतंकी हमले में 38 लोगों की मौत हो गई। ये हमला खैबर पख्तूनख्वा के डाउन कुर्रम इलाके में एक पैसेंजर वैन पर हुआ है। हमले में एक पुलिस अधिकारी और महिलाओं समेत दर्जनों लोग घायल भी हुए हैं। हमला कुर्रम के पाराचिनार से काफिले में जा रहे यात्री वैन को निशाना बनाकर किया गया। हमले की पुष्टि खैबर पख्तूनख्वा के मुख्य सचिव नदीम असलम चौधरी ने की।

'गुड गवर्नेंस रीजनल' कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने की घोषणा

छत्तीसगढ़ में शुरू होगी 'मुख्यमंत्री गुड गवर्नेंस फेलो योजना'

छत्तीसगढ़ के मूलनिवासी छात्रों के लिए पब्लिक पॉलिसी एण्ड गवर्नेंस में मास्टर पाठ्यक्रम होगा शुरू

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज रायपुर में 'गुड गवर्नेंस' विषय पर दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए प्रदेश में 'मुख्यमंत्री गुड गवर्नेंस फेलो योजना' शुरू करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इस योजना के तहत छत्तीसगढ़ सरकार आईआईएम रायपुर के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ के मूलनिवासी छात्रों के लिए पब्लिक पॉलिसी एण्ड गवर्नेंस में मास्टर पाठ्यक्रम शुरू करेगी। इसके लिए छात्रों का चयन कैट के माध्यम से किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इस योजना में आईआईएम रायपुर में कक्षाओं के साथ-साथ छात्रों को छत्तीसगढ़ शासन के विभिन्न विभागों में व्यवहारिक अनुभव भी दिया जाएगा। पाठ्यक्रम की पूरी फीस राज्य सरकार वहन करेगी, साथ ही छात्रों को निर्धारित मासिक स्टायफंड प्रदान करेगी। यह योजना शासन में दक्षता और पारदर्शिता बढ़ाने के साथ-साथ राज्य के युवाओं को उच्च स्तरीय शिक्षा और प्रायोगिक अनुभव का अवसर प्रदान करेगी। इसका उद्देश्य छत्तीसगढ़ में पेशेवरों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार करना है जो सरकार, एनजीओ, थिंक टैंक और निजी क्षेत्र के साथ मिलकर गवर्नेंस को बेहतर बनाने के क्षेत्र में काम करेगी।

मुख्यमंत्री ने दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन में देश भर से आए हुए वरिष्ठ अधिकारियों, विषय विशेषज्ञों, सुधीजनों का छत्तीसगढ़ के नागरिकों की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि आप लोगों ने देश के विभिन्न राज्यों में चल रहे बेस्ट प्रेक्टिसेस को एक दूसरे से साझा किया है। सबने मिलकर सुशासन के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और भागीदारी को बढ़ाने के संबंध में विस्तृत विचार-विमर्श किया है। इन दो दिनों के दौरान आप लोगों ने छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सुशासन की स्थापना की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के बारे में काफी कुछ जाना और समझा होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि जैसा कि आप लोग जानते हैं कि हम लोगों की राजनैतिक विचारधारा के मूल में ही सुशासन का विचार है। हमारे पुराणों में जिसे रामराज कहा गया है, उसे ही हम सुशासन कहते हैं। सर्वे भवन्तु सुखिन: हमारा मूलमंत्र है। अंत्योदय और एकात्म मानववाद हमारा राजनैतिक दर्शन है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने समापन सत्र को किया सम्बोधित

मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी हमारे प्रेरणा पुरूष हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नेतृत्व में हम सुशासन के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण में छत्तीसगढ़ की अधिक से अधिक से भागीदारी के लिए प्रयासरत हैं। हमारा 44 प्रतिशत भू-भाग घने जंगलों से आच्छादित है, इसलिए भारत के पर्यावरण और जैव विविधता को बचाए रखने की महती जिम्मेदारी भी हम पर है। इन सबके साथ-साथ राज्य की जनजातीय संस्कृति और परंपराओं को बचाए रखना भी हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। हमने राज्य में समृद्ध खनिज संपदा, औद्योगिक विस्तार, कृषि विस्तार के साथ-साथ यहां के प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौंदर्य को भी महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में चिन्हित किया है।

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में सुशासन स्थापित करने के साथ ही विकास में जनभागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विजन डाक्यूमेंट 2047 तक आजादी का अमृत महोत्सव तैयार किया है। उन्होंने कहा कि सुशासन का अर्थ पारदर्शिता और जवाबदेही है। सभी मंत्रालयों का आपस में समन्वय हो और वे एक दूसरे से सतत संपर्क स्थापित करते हुए निरंतर नवाचार की ओर उन्मुख रहते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राही तक पहुंचे, यह सुनिश्चित करें। इस तरह के आयोजन से व्यक्तिगत संपर्क बढ़ता है और एक दूसरे की संस्कृति का आदान प्रदान होता है।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सुशासन पर आधारित ई बुक 'मिनिमम गवर्नमेंट मैक्सिमम गवर्नेंस' का विमोचन भी किया। सम्मेलन में गुड गवर्नेंस की बेस्ट प्रेक्टिसेस, नागरिक सशक्तिकरण, शासन-प्रशासन के कामकाज और नागरिक सेवाओं की आम जनता तक पहुंच को आसान बनाने के लिए विभिन्न ई-प्लेटफार्म के उपयोग आदि से संबंधित विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद प्रभावित हुए क्लाइव लॉयड, कहा- उनके जैसे और पीएम चाहिए

जॉर्जटाउन (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के पूर्व कप्तान और दिग्गज क्रिकेटर क्लाइव लॉयड ने गुरुवार को जॉर्जटाउन में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने के बाद अपनी खुशी जताई। दो बार वर्ल्ड कप जीतने वाले कप्तान ने पीएम मोदी की क्रिकेट को बढ़ावा देने की कोशिशों की सराहना की और कहा कि ऐसे और नेता होने चाहिए।

गुयाना के प्रमुख क्रिकेटरों ने गुरुवार को पीएम मोदी से मुलाकात की और इसे सुखद बातचीत बताया। पीएम मोदी ने भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, क्रिकेट के जरिए जुड़ाव! गुयाना के प्रमुख क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ एक शानदार बातचीत हुई। इस खेल ने हमारे देशों को करीब लाया है और हमारी सांस्कृतिक कड़ी को मजबूत किया है। क्लाइव लॉयड ने 1966 से 1985 तक वेस्टइंडीज के लिए 110 टेस्ट खेले हैं। उन्होंने इस मुलाकात की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि भारत में उनके 11 खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है और पीएम मोदी के क्रिकेट प्रेम से वे प्रभावित हैं। लॉयड ने कहा, हमारी बहुत अच्छी बातचीत हुई। मुझे लगता है कि अब हमारे 11 खिलाड़ी भारत में प्रशिक्षण लेंगे। यह एक बेहतरीन कदम है। हम इसके लिए उनके आभारी हैंज पीएम मोदी क्रिकेट में रुचि रखते हैं, जो बहुत अच्छी बात है। वह क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए प्रयास कर रहे हैं। हमें ऐसे और प्रधानमंत्री चाहिए। पूर्व वेस्टइंडीज ऑलराउंडर एल्विन कालीचरण भी इस बैठक में शामिल थे। वह भी पीएम मोदी के क्रिकेट ज्ञान से प्रभावित हुए। उन्होंने कहा, भारत में हर कोई क्रिकेट जानता है, लेकिन उनका ज्ञान खास है। उन्हें पता है कि हम भारत कब गए थे और वे हमें पहले नाम से जानते हैं। प्रधानमंत्री से व्यक्तिगत रूप से मिलना अद्भुत अनुभव है। युवा क्रिकेटरों के लिए भारत की ओर से जो मदद दी जा रही है, वह बहुत सराहनीय है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीन देशों की यात्रा के तीसरे चरण में गुयाना पहुंचे थे। यह पिछले 50 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली गुयाना यात्रा है। इस यात्रा के दौरान पीएम मोदी ने कैरेबियाई साझेदार देशों के नेताओं के साथ दूसरे इंडिया-कैरिकॉम सम्मेलन में भी भाग लिया।

केंद्रीय राज्यमंत्री ने ट्रेक्टर चलाकर किसानों से कहा- पराली को ना लगाएं आग

मोगा (आरएनएस)। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के राज्यमंत्री तोखन साहू ने मोगा जिले में आकांक्षी जिला एवं ब्लॉक कार्यक्रम के तहत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के लिए एक बैठक की अध्यक्षता की। मंत्री साहू ने पंजाब के घटते भूजल स्तर पर चिंता व्यक्त की और किसानों से धान की खेती से हटकर फसल विविधीकरण अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने फसल अवशेषों को न जलाकर पर्यावरण की रक्षा करने की आवश्यकता पर बल दिया। साहू ने कार्यक्रम के मापदंडों को पूरा करते हुए देश के 112 आकांक्षी जिलों में मोगा जिले के प्रदर्शन की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि 2018 में कार्यक्रम की शुरुआत के बाद से मोगा जिले को स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, बुनियादी ढांचे, कृषि और वित्तीय विकास के लिए लगभग 14 करोड़ रुपए मिले हैं।

सुकमा के कोंटा में जवानों के साथ बड़ी मुठभेड़, 10 नक्सलियों को किया ढेर, मिले आधुनिक हथियार

जगदलपुर (विसं)। बस्तर में नक्सलियों पर प्रहार जारी है। सुकमा जिले के कोन्टा के भेज्जी इलाके में नक्सलियों के साथ सुरक्षाबलों की बड़ी मुठभेड़ हुई है। इस मुठभेड़ में नक्सलियों का बड़ा नुकसान हुआ है। मौके से 10 नक्सलियों के शव मिले हैं। साथ ही मौके से एक ए के 47 राइफल सहित बड़ी संख्या में हथियार बरामद किए गए हैं। इलाके में अभी भी सर्चिंग जारी है।

जवानों ने तीन ऑटोमैटिक हथियार भी बरामद किए हैं। बताया जा रहा है कि नक्सलियों के साथ सुबह में जवानों के साथ मुठभेड़ की शुरुआत हुई थी। दोनों तरफ से सैकड़ों राउंड फायरिंग हुई है। खबर के मुताबिक डीआरजी की टीम नक्सलियों की घेराबंदी के लिए निकली थी। सूचना मिली थी कि ओडिशा के रास्ते नक्सली छत्तीसगढ़ के जंगल में प्रवेश किया हैं। डीआरजी जवानों के साथ सीआरपीएफ के जवान भी मुठभेड़ में शामिल थे।

वहीं, बस्तर आईजी पी सुंदरराज ने की मुठभेड़ की पुष्टि की है। मारे गए नक्सलियों की संख्या और हथियारों की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। उन्होंने बताया कि दोनों ओर से गोलीबारी हो रही है। सुकमा एसपी ने नक्सलियों के शव मिलने की पुष्टि कर दी है। कोराजुगुड़ा, दंतेसपुरम, नागाराम, भंडारपदर के जंगल-पहाड़ी में यह मुठभेड़ हुई है।

सीएम नीतीश कुमार ने 8,837 करोड़ रुपए की योजनाओं का दिया तोहफा

पटना (आरएनएस)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को ग्रामीण कार्य विभाग की 8,837.77 करोड़ रुपए लागत की 6,199 योजनाओं का रिमोट के माध्यम से कार्यारंभ एवं उद्घाटन कर प्रदेश की जनता को बड़ा तोहफा दिया। इसके तहत 6,509.93 करोड़ रुपए की 4,390 योजनाओं का कार्यारंभ तथा 2,327.84 करोड़ रुपए की 1,809 योजनाओं का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अत्यंत खुशी की बात है कि ग्रामीण कार्य विभाग द्वारा कई पथों एवं पुलों का उद्घाटन के साथ-साथ शिलान्यास किया गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन और सुगम होगा। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि जिन योजनाओं का कार्यारंभ किया गया है, उन सभी पथों एवं पुलों का निर्माण गुणवत्तापूर्ण तरीके से ससमय पूर्ण कर लिया जाएगा। वैसे सभी पथों एवं पुलों, जिनका उद्घाटन किया जा रहा है, उन सभी पथों का नियमित निरीक्षण करते हुए उनका मेंटेनेंस भी किया जाएगा, जिससे उसकी गुणवत्ता बनी रहे।

मुख्यमंत्री साय भगवती दीक्षा और मोक्ष माला कार्यक्रम में हुए शामिल

भगवान महावीर के विचार समूची मानवता के लिए हैं प्रेरणास्त्रोत : सीएम विष्णुदेव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय राजधानी रायपुर के दादाबाड़ी में आयोजित भगवती दीक्षा और मोक्ष माला कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने दादाबाड़ी में भगवान ऋषभदेव की आरती कर प्रदेश की जनता की सुख-समृद्धि और उन्नति के लिए प्रार्थना की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह भगवान महावीर के विचारों की ही शक्ति है कि पीढ़ी दर पीढ़ी उनके मूल्यों को लेकर जैन समाज आगे बढ़ रहा है। महावीर स्वामी के विचार केवल जैन धर्म के अनुयायियों के लिए ही नहीं बल्कि समूची मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर सभी जैन मुनियों का आशीर्वाद लिया और कहा कि यह छत्तीसगढ़ का सौभाग्य है कि पूरे देश से जैन मुनि यहां आए है।

उन्होंने दीक्षा ग्रहण करने वाले मुमुक्षु भाई अरिहंत जी, मुमुक्षु भाई नीलेश जी तथा मुमुक्षु बहन निकिता जी और उनके परिजनों का अभिनंदन किया। श्री साय ने कहा कि जैन समाज का सौभाग्य है कि समाज के युवा धर्म को आगे बढ़ाने दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं। श्री साय ने कहा कि यह क्षण समूचे समाज के लिए प्रेरणादायक है।

इस अवसर पर विधायक श्री पुरंदर मिश्रा, पूर्व संसदीय सचिव श्री लाभचंद बाफना, ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विजय कांकरिया और जैन मुनिगण और जैन समाज के अनुयायी मौजूद रहे।

छत्तीसगढ़ में नागरिक केंद्रित सुशासन पर दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

प्रदेश के विभागों में किए जा रहे नवाचार और देश के विभिन्न जिलों में समग्र विकास के लिए अपनायी गई कार्यप्रणाली से कराया अवगत

रायपुर (विश्व परिवार)। शासकीय कार्यप्रणाली में सुशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नवा रायपुर में दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। आज दूसरे और अंतिम दिन राज्य के विभिन्न विभागों और देशभर के जिलों में किए गए सुशासन प्रयासों को दो सत्रों के आयोजन में सभी से साझा किया गया। इस सम्मेलन में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों ने अपने अपने कार्य क्षेत्र में सुशासन लाने के लिए किए गए नवाचारों और विभिन्न कार्यप्रणालियों की जानकारी दी।

सम्मेलन के दौरान बताया गया कि नवाचार में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) जैसी नई तकनीकों, संसाधनों के कुशल उपयोग, वित्तीय प्रबंधन, पारदर्शिता, फीडबैक प्रणाली और जनसहभागिता जैसी बातों पर विशेष ध्यान दिया गया। उन्होंने बताया कि कैसे इन घटकों को प्रभावी रूप से लागू कर सरकारी प्रक्रियाओं में गति लाई जा सकती है और हितग्राहियों तक सुविधाएं तेजी से पहुंचाई जा सकती हैं। सम्मेलन के दो सत्रों में हुई चर्चाओं में यह भी स्पष्ट किया गया कि सुशासन को सफल बनाने के लिए पारदर्शिता और जनभागीदारी आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ के बेस्ट प्रैक्टिसेस में आज सचिव आबकारी श्रीमती आर संगीता ने आबकारी विभाग में भ्रष्ट आचरण पर शिकंजा कसने किए गए प्रयासों, शराब दुकानों में लाये गये बदलाव, समय पर स्टाफ की उपस्थिति सुनिश्चित करने प्रयुक्त किए जा रहे फेस रेकग्निशन ऑथेंटिकेशन, पारदर्शिता, रिटेल दुकानों में ग्लोबल ब्रांड की उपलब्धता मनपसंद मोबाइल ऐप आदि की जानकारी दी। इसी तरह स्कूल शिक्षा सचिव श्री सिद्धार्थ कोमल परदेसी ने स्कूल शिक्षा व्यवस्था में आईआईटी भिलाई के सहयोग से बनाये गये विद्या समीक्षा केंद्र की जानकारी दी। इस एआई आधारित सॉफ्टवेर से योजनाओं की मॉनिटरिंग, विश्लेषण तथा प्लानिंग में सुविधा हो रही है। आयुक्त मनरेगा और संचालक प्रधानमंत्री आवास योजना श्री रजत बंसल ने योजना के तहत आवास निर्माण के लिए किए गए प्रयास, गृह एप्प के ज़रिये योजना के बेहतरीन क्रियान्वयन में मिल रही मदद, आदि से सबको वाक़िफ़ किया। नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सौरभ कुमार ने 237 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में बसाये जा रहे नवा रायपुर की आवश्यकता, उसके फ़ायदे, उपलब्ध करायी जा रही सुविधाएँ, आदि के बारे में बताया। दंतेवाड़ा जिला पंचायत सीईओ श्री जयंत नाहटा ने नवाचार के ज़िले में भू अभिलेखों का डिजिटाइज़ेशन, पहचान दंतेवाड़ा के ज़रिये नागरिक सुविधाएँ हर हितग्राही तक समय पर उपलब्ध कराने संबंधी नवाचार के अलावा स्कूल और स्वास्थ्य संस्थाओं में चैट जीपीटी की सहायता से सुविधा उपलब्ध कराये जाने की जानकारी दी। क्षेत्रीय सम्मेलन के अंतिम सत्र में विभिन्न राज्यों के जिलों में समग्र विकास के संतृप्ति दृष्टिकोण से भी संबंधित ज़िले के कलेक्टर्स और आयुक्त ने विचार साझा किए। इनमें कलेक्टर कोण्डागाँव श्री कुणाल दूदावत, असम के बरपेटा कलेक्टर श्री आयुष गर्ग, राजस्थान बीकानेर की कलेक्टर सुश्री नम्रता, गुजरात महसेना कलेक्टर श्री रुतुराज सिंह जाधव, असम के नलबाड़ी जिले की जिला आयुक्त सुश्री वर्नाली डेका आदि सम्मिलित हैं।

मुख्यमंत्री साय आज बिलासपुर में 143 करोड़ की लागत के विकास कार्यों का करेंगे लोकार्पण, राउत नाचा महोत्सव में भी होंगे शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय 23 नवंबर को बिलासपुर को 143 करोड़ 68 लाख रूपये की लागत के अनेक विकास कार्यों की सौगात देंगे। मुख्यमंत्री बिलासपुर में आयोजित कार्यक्रमों के दौरान सकरी रोड, मिनोचा रोड, स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, मिनी स्टेडियम, सिटी कोतवाली के पास निर्मित मल्टीलेवल पार्किंग और अरपा नदी तट पर निर्मित राम सेतु मार्ग का लोकार्पण करेंगे। श्री साय इस मौके पर लाल बहादुर शास्त्री स्कूल में राउत नाचा महोत्सव में शामिल होंगे।

रामसेतु मार्ग- अरपा उत्थान और तट संवर्धन प्रोजेक्ट अंतर्गत अरपा नदी के दांयी तरफ की सड़क का नाम रामसेतु मार्ग रखा गया है। रामसेतु मार्ग की लागत 49 करोड़ 98 लाख रूपये है, जिसमें फूटपाथ, डिवाइडर, स्ट्रीट लाइट, रिटेनिंग वॉल, पीचिंग और सौंदर्यीकरण कार्य शामिल है।

मिनी स्टेडियम- शहर के पुराने और प्रतिष्ठित शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला मल्टीपरपज़ स्कूल के मैदान को संवार कर बिलासपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा 21 करोड़ 79 लाख रूपये की लागत से मिनी स्टेडियम का निर्माण किया गया है, जिसमें 14115 वर्ग मीटर का सर्व सुविधायुक्त क्रिकेट मैदान है जिसकी दर्शक क्षमता 850 है। यहां डे-नाईट मैच खेलने की सुविधा है। यहां इनडोर गेम्स जैसे स्नूकर, बिलियर्ड्स, टेबल टेनिस, स्क्वैश खेलने की सुविधा के साथ-साथ आधुनिक जिम बनाया गया है। इसके अलावा ट्रेनिंग हॉल का निर्माण किया गया है। इसी भवन में अलग से वीआईपी गैलरी, एनाउंसमेंट बॉक्स और पेंट्री रूम के साथ ही यहां बाहर से आने वाले खिलाड़ियों के लिए एक हॉस्टल बनाया गया है। यहां दो लॉन टेनिस कोर्ट बनाया गया है।

स्पोर्ट्स कांप्लेक्स- 14 करोड़ 60 लाख रूपये की लागत से संजय तरण पुष्कर परिसर में स्पोर्ट्स कांप्लेक्स का निर्माण किया गया है, इस तीन मंजिला इस स्पोर्ट्स कांप्लेक्स के बेसमेंट में पार्किंग, ग्राउंड फ्लोर में रिसेप्शन और रेस्टोरेंट संचालित होगा। प्रथम तल में बैडमिंटन, स्क्वैश कोर्ट, टेबल टेनिस, स्नूकर, बिलियर्ड्स, द्वितीय तल में मल्टीपरपज हॉल, योगा, मैट गेम की सुविधा है। तीसरे तल में मनोरंजन की अनेक सुविधाएं है। उल्लेखनीय है कि बिलासपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा शहर में स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने तीन बड़े प्रोजेक्ट पर काम किया गया है, जिनमें पिंक प्ले ग्राउंड का लोकार्पण पहले ही किया जा चुका है।

कोतवाली मल्टीलेवल पार्किंग- 29 करोड़ 76 लाख की लागत से साढ़े तीन एकड़ में कोतवाली थाना परिसर में तीन मंजिला मल्टीलेवल कार पार्किंग बनाया गया है। ग्राउंड फ्लोर के अलावा सभी फ्लोर में पार्किंग की सुविधा दी गई है जिसमें 192 कार और 325 बाइक एक साथ पार्क की जा सकेगी। ग्राउंड फ्लोर को कमर्शियल कांप्लेक्स के तौर पर विकसित किया गया है जिसमें 46 दुकानों का निर्माण किया गया है।

उस्लापुर-सकरी सड़क- उस्लापुर रेल्वे ओव्हरब्रिज से लेकर सकरी बाईपास चौक तक 15 करोड़ 87 लाख की लागत से नगर निगम द्वारा सवा चार किमी सड़क का उन्नयन और चौड़ीकरण किया गया है। सड़क चौड़ीकरण और उन्नयन होने से राहगीरों को काफी राहत मिली है और ट्रैफिक जाम से मुक्ति मिली है। उन्नयन और चौड़ीकरण के तहत मार्ग की चौड़ाई बढ़ाई गई है, डिवाइडर बनाया गया है, स्ट्रीट लाइट और दोनों तरफ नाली निर्माण भी किया गया है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शनिवार 23 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में मुख्यमंत्री साय ने लोकरंजनी की प्रस्तुति को सराहा, प्रतीक चिन्ह भेंटकर कलाकारों का किया उत्साहवर्धन

आरंग (विश्व परिवार)। रायपुर दिल्ली के भारत मंडपम में चल रहे 43 वें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला में छत्तीसगढ़ दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व कर रहे ग्राम बोड़रा निवासी वरिष्ठ लोक कलाकार डॉ.पुरुषोत्तम चंद्राकर कृत लोकरंजनी टीम की प्रस्तुति को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सराहना करते हुए प्रतीक चिन्ह भेंटकर उत्साह बढ़ाया। डाक्टर पुरुषोत्तम ने बताया श्री साय ने नई दिल्ली के एम्फी थिएटर भारत मंडपम में आयोजित लोकरंजनी लोक कला मंच द्वारा प्रस्तुत छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक कार्यक्रम गौरा-गौरी, भोजली, राउत नाचा, सुआ, पंथी और करमा, ददरिया जैसे पारंपरिक लोक गीतों व नृत्यों की शानदार प्रस्तुति को जमकर सराहा।इस मौके पर संस्कृति विभाग के संचालक विवेक आचार्य, राहुल भगत, श्रुति सिंग, पी. अनबनगल, युगल तिवारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अनुराधा दुबे ने किया।इस मौके पर देश भर से पहुंचे कलाकारों की उपस्थिति रही। वहीं आरंग क्षेत्र के कलाकारों द्वारा प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर क्षेत्र व प्रदेश का नाम गौरवान्वित करने पर स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन ने इन कलाकारों को शुभकामनाएं दिए हैं।

पीएम आवास योजना शहरी 2.0 के लिए आवश्यक दस्तावेज होना अनिवार्य

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई के प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 रैपिड असेसमेंट सर्वे हितग्राही सर्वेक्षण हेतु शिविर का आयोजन 15 नवम्बर 2024 से पांचो जोन कार्यालय में प्रारंभ किया गया है। शिविर के माध्यम से अब तक 62 हितग्राहियों का आवेदन प्राप्त हुआ है। नागरिको को इस योजना के बारे में एवं कौन-कौन से दस्तावेज जमा किया जाना है उसकी भी जानकारी दी जा रही है। प्रमुख दस्तावेज भूमि संबंधी दस्तावेज, आय प्रमाण पत्र (सक्षम अधिकारी द्वारा जारी), जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड पुरे परिवार का, पेन कार्ड, बैंक पासबुक, राशन कार्ड अनिवार्य है। हितग्राही सभी दस्तावेज की छायाप्रति अपने पास अवश्य रखें। जिन हितग्राही के पास दिये गये दस्तावेज नहीं है वे शीध्र ही बनवा लें। मांगे गये दस्तावेज में कमी पाई गई तो आवेदन जमा नहीं लिया जाएगा। निगम के योजना शाखा में कार्यालयीन अवधि में आकर भी योजना से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते है। जिन हितग्राहियों के पास खुद का जमीन है पटटा रजिस्ट्री है उनके लिए लिए यह बहुत ही अच्छा अवसर है सभी लोग अपना एक सुंदर सा मकान बना सकते हैं।

समय-सीमा में पूरा कराएं हर घर जल क़ा कार्य : कलेक्टर दीपक सोनी

समय पर काम पूरा नहीं कराने वाले ठेकेदारों का रुकेगा बिल भुगतान, 5 एजेंसियों के टेंडर निरस्त करने के निर्देश

जल जीवन मिशन अंतर्गत कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री दीपक सोनी ने शुक्रवार को संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में जल जीवन मिशन अंतर्गत कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने विकासखंडवार हर घर जल के कार्य पूर्णता एवं प्रगति की समीक्षा करते हुए 50 प्रतिशत से अधिक कार्य पूर्ण करने वाले ठेकेदारों को 30 दिसम्बर 2024 तक कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने तय समय पर काम पूरा नहीं करने वाले ठेकेदारों के बिल क़ा भुगतान रोकने अधिकारियों को निर्देशित किया।बैठक में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन अभियंता मनोज ठाकुर, एसडीओ, सब- इंजीनियर एवं ठेकेदार उपस्थित थे।

कलेक्टर ने डाटा एंट्री कार्य में सहयोग करने वाले 5 एजेंसियों को बैठक में अनुपस्थित रहने के कारण उनका टेंडर निरस्त करने के निर्देश कार्यपालन अभियंता को दिए। कलेक्टर ने कहा कि जल जीवन मिशन के कार्य में डाटा एंट्री क़ा कार्य महत्वपूर्ण है और शुद्धतापूर्ण डाटा एंट्री भी आवशयक है। उन्होने कहा कि भारत सरकार द्वारा हर घर जल क़ा कार्य 31 मार्च 2025 तक शतप्रतिशत पूरा करने क़ा लक्ष्य रखा गया है। ठेकेदार कोई भी कार्य ज्यादा समय तक लंबित न रखें। जिन्होने 50 प्रतिशत से कम काम कराया है वे शतप्रतिशत पूरा कराएं। जल जीवन मिशन के कार्य में गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। शिकायत मिलने पर सम्बंधित ठेकेदार पर कार्यवाही की जाएगी। डीपीआर में जो भी कार्य एवं मशीनरी का प्रावधान है सभी पूरा होना चाहिए।उन्होंने कहा कि पाईप लाईन बिछाने सडक खोदने के बाद पहले अस्थाई रूप से रोड ठीक करें एवं वाटर टेस्टिंग काम पूरा हो जाने पर रोड को स्थायी रूप से ठीक करें। कहीं भी सड़क खोद कर नहीं छोड़ना है। वाटर टेस्टिंग के लिए स्थानीय लोगों से मिस्त्री क़ा काम काम कराएं जिससे पानी सप्लाई के काम में किसी प्रकार की असुविधा न हो। कलेक्टर श्री सोनी ने दूषित जल से फैलने वाली बिमारियों को गंभीरता से लेते हुए दूषित जल स्रोत को रोकने तथा लोगों को सचेत करने प्रभावी कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होने खा कि हर तीन महीन में वाटर टेस्टिंग कराएं और जहाँ पानी दूषित हो तत्काल लोगों को सूचित करें। इसके लिए मानक कार्यप्राणली तैयार करें। उन्होंने गांव में कोई भी पाईप काटकर पानी क़ा उपयोग करता है उसपर कार्यवाही भी करें।

बताया गया कि जल जीवन मिशन अंतर्गत जिले के 736 गांव में हर घर जल पहुँचाना है। अब तक 323 गांव में हर घर जल पहुंच चुका है जिसमें विकासखंड बलौदाबाजार के 79 गांव, भाटापारा के 39 गांव, पलारी के 87 गांव, कसडोल के 62 गांव एवं विकासखंड सिमगा के 56 गांव शामिल हैं।

स्वच्छ एवं सुंदर भिलाई : चंद्रा मोर्या टाकिज अंडरब्रिज के निचे जल भराव से निजात कराने, दिए निर्देश

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। सफाई, पानी, बिजली, नवनिर्माण, शौचालय जीर्णोधार, एस.एल.आर.एम सेंटर आदि का रोज सुबह 7:30 बजे से निरीक्षण करने आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय सभी जोन में दौरा कर रहे है। इसी तारतम्य में आज जोन क्रं. 03 मदर टेरेसा नगर क्षेत्र में निरीक्षण हेतु पहुंचे। तीनदर्शन मंदिर 18 नम्बर रोड डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन, सुभाष चैंक बीएसपी पानी टंकी के पास हमर क्लीनिक निर्माण, अम्बेडर नगर सुलभ शौचालय गुपचुप मोहल्ला में निर्मित सुलभ का अवलोकन, 18 नम्बर रोड बैकुण्ठधाम तालाब, एस.एल.आर.एम. सेंटर में कचरा सेग्रिगेशन का कार्य, छावनी चैंक पावर हाउस अंडरब्रिज, विवेकानंद उद्यान, सेक्टर 02 छट तालाब, फुटबाल ग्राउण्ड आदि का निरीक्षण किए।

आयुक्त दौरा करते-करते चंद्रा मोर्या चैंक अंडरब्रिज जल भराव क्षेत्र का निरीक्षण करने पहुंचे। वहां की स्थिति पूर्व की भांति जल भराव की बनी रहती है। थोड़ा भी पानी गिर जाने से आने-जाने वाले को परेशानी होती है। जल भराव को देखते हुए मोटर पम्प से पानी लिफ्ट करके खाली करना पड़ता है। इसको देखते हुए उन्होने अभियंता बसंत साहू को कहा हर समस्या का समाधान हो सकता है, प्रयास करना पड़ता है। रेल्वे के संबंधित विभाग में संपर्क कर उनके अभियंता से मिले और मिलकर तकनीकी त्रुटि के कारण जो समस्या आ रही है। उसका निराकरण का समाधान खोजें। हमे यह भी ध्यान देना है, कि हम सब किस प्रकार से बिना मोटर पम्प का इस्तेमाल किये जल भराव समस्या का निदान कर सकते है। यह पुरानी समस्या बन गई है, इसका उपाय हम सबको मिलकर ढुंढना होगा। एस.एल.आर.एम. सेंटर में स्वच्छता दीदी द्वारा किये जा रहे खाद का निर्माण एवं वहां की सफाई व्यवस्था देखकर आयुक्त ने तारीफ की कोई भी समस्या हो तो हमसे मिल सकते है। गुपचुप मोहल्ला अम्बेडकर नगर सुलभ शौचालय में पानी की व्यवस्था करवा के शीध्र उपयोगी बनाने को कहा।

भ्रमण के दौरान जोन आयुक्त अजय सिंह राजपूत, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, अभियंता बसंत साहू, नितेश मेश्राम, शंकर मरकाम, जनसम्पर्क अधिकारी अजय शुक्ला, सहायक स्वास्थ्य अधिकारी विरेन्द्र बंजारे आदि उपस्थित रहे।

भाटापारा में स्त्री रोग विशेषज्ञ की पदस्थापना से स्वास्थ्य सुविधाओं का हुआ विस्तार

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु लगातार प्रयासरत है। इस कड़ी में स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल तथा कलेक्टर दीपक सोनी की पहल से जिले के सिविल अस्पताल भाटापारा में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ ऋतु बघमार की नवीन पदस्थापना की गई है जिससे क्षेत्र की जनता को सुविधा का लाभ मिलने लगा है।

इस बारे में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश कुमार अवस्थी ने बताया की सिविल अस्पताल भाटापारा में स्त्री रोग विशेषज्ञ की पदस्थापना से महिलाओं की रूटीन ओपीडी जाँच के साथ-साथ सामान्य और सिजेरियन प्रसव होने लगा है इसके अलावा महिला नसबंदी और गर्भपात की भी सुविधा उपलब्ध हुई है। भाटापारा के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ राजेन्द्र माहेश्वरी के अनुसार स्त्री रोग विशेषज्ञ की पदस्थापना से अब तक 3 सिजेरियन प्रसव हो चुके है 30 महिला नसबंदी तथा दो गर्भपात की सुविधा मरीजों को प्रदान की गई है। अस्पताल में सोनोग्राफी की भी सुविधा उपलब्ध है। -**ताराचंद कठोत्रे**

स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.ऋतु शिल्प वर्मा ने सिविल हॉस्पिटल भाटापारा में कार्यभार संभाला

भाटापारा के सिविल हॉस्पिटल में रायपुर मेडिकल कॉलेज से शिक्षित गोल्ड मेडलिस्ट स्त्री रोग एवं प्रसूति विशेषज्ञ डॉ. ऋतु शिल्प वर्मा ने अपना कार्यभार ग्रहण किया है। डॉ. रितु शिल्प वर्मा ने दूरबीन पद्धति से गर्भाशय के इलाज करने में फैलोशिप किया है। साथ ही सोनोग्राफी एवं सी.आई. एम. पी. रजो निवृत्ति के समय की समस्याओं एवं बांझपन की समस्याओं को दूर करने में भी विशेषज्ञता हासिल किया है। वर्तमान में डॉ. रितु 'इंडियन मेनोपॉज सोसायटी चैप्टर रायपुर' की पदाधिकारी हैं। डॉ. रितु ने पूर्व में जिला चिकित्सालय दुर्ग में भी अपनी सेवाएं दी हैं।

संत कबीर कृषि महाविद्यालय अनुसंधान केंद्र भवन का हुआ लोकार्पण

रायपुर (विश्व परिवार)। कवर्धा के समीप घोटिया रोड पर स्थित 50 एकड़ में बनकर तैयार संत कबीर कृषि महाविद्यालय अनुसंधान केंद्र भवन का उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा और कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम ने विधिवत फीता काटकर लोकार्पण किया। कृषि महाविद्यालय के अनुसंधान केंद्र क्षेत्र के किसानों के लिए उन्नत कृषि तकनीक, प्रशिक्षण, और शोध का प्रमुख केंद्र बनेगा।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने किसानों को ट्रैक्टर, सब्जी कीट, मसूर मिनी कीट, मृदा स्वस्थ कार्ड और आइस बॉक्स का वितरण किया। कृषि महाविद्यालय के खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वहां जैविक किसान मेला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सांसद श्री संतोष पाण्डेय और पंडरिया विधायक श्रीमती भावना बोहरा, पूर्व संसदीय सचिव डॉ. सियाराम साहू, श्री कैलाश चंद्रवंशी, कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, अधिष्ठाता डॉ. राजीव श्रीवास्तव, संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. एसएस टूटेजा, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. निमोध प्रभ सहित जिले के किसान एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि कृषि को लाभकारी बनाने सरकार की प्राथमिकता है। यह महाविद्यालय किसानों को वैज्ञानिक पद्धतियों से जोड़ते हुए उनकी आय बढ़ाने में भी मदद करेगा। उन्होंने क्षेत्र के किसानों को हर संभव सहायता और सुविधा प्रदान करने का आश्वासन दिया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह की पहल से राज्य का कृषि क्षेत्र आत्मनिर्भर बनेगा और यह केंद्र पूरे राज्य में आदर्श के रूप में कार्य करेगा।

वर्तमान समय तकनीकी एवं डिजीटल व्यापार का समय, हमें अपने व्यापार में इसका उपयोग करना होगा : प्रवीण खण्डेलवाल

अन्यथा हम भी एचएमटी घडी, नोकिया मोबाईल एवं एम्बेसडर कार के समान व्यापार जगत से बाहर हो जाएंगें : प्रवीण खण्डेलवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि बिलासपुर में 'छतीसगढ़ व्यापार सम्मेलन एवं कैट का प्रादेशिक दीपावली मिलन समारोह' कार्यक्रम आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद चांदनी चौक नई दिल्ली एवं कैट के राष्ट्रीय महामंत्री माननीय श्री प्रवीण खण्डेलवाल जी थे। अति विशिष्ठ अतिथि कैट के चेयरमेन श्री बृजमोहन अग्रवाल जी थे। क्रार्यक्रम की अध्यक्षता कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी जी थे। विशिष्ठ अतिथि कैट के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जितेन्द्र गांधी जी, कैट के प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी जी, कैट के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री राजू सलूजा जी, एवं बिलासपुर प्रभारी श्री राकेश ओचवानी जी थे। कार्यक्रम में प्रदेश के सभी ईकाइयों के पदाधिकारी शामिल हुए।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी ने बताया कि सर्वप्रथम दानवीर भामाशाह एवं महालक्ष्मी जी प्रतिमा पर मालर्यापन कर दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुवात की गई। तत्पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं व्यापारियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद चांदनी चौक नई दिल्ली एवं कैट के राष्ट्रीय महामंत्री माननीय श्री प्रवीण खण्डेलवाल जी ने अपने उद्बोधन में भविष्य के व्यापार पर आगाह करते हुए कहा कि समय के साथ अपने व्यापार में बदलाव कर डिजिटल करना होगा, अन्यथा आपका व्यापार भविष्य में पिछड़ जाएगा, उन्होंने एचएमटी घड़ी कम्पनी, नोकिया मोबाइल कम्पनी व कोडक फ़िल्म रील कम्पनियों का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने समय के साथ अपने व्यापार में बदलाव नही किया और आज वे कम्पनियां इतिहास बन गयी है। उन्होने आगे कहा कि वर्तमान समय तकनीकी एवं डिजीटल व्यापार का समय है। जिससे कि हम अपने मोबाईल व्हाट्सप्प व्यापार से कर सकते है। जिसके कि लिए किसी दुकान की आवश्यकता नहीं होती है। आज बडी-बडी कम्पनीयॉ जैसे कि अमेजान, फिल्पकार्ट एवं जैमोटो जैसी कम्पनीयॉ मोबाईल के माध्यम से अपना व्यापार करती है। ये कम्पनीयां किसी भी वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती है। फिर भी करोड़ों रूपये का व्यापार करती है। हमे भी इस तकनीक का इस्तेमाल कर व्यापार करना चाहिए।

कैट राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी जी ने कहा कि आज व्यापार में महिला उधमियों का विशेष योगदान है। आज देश के लगभग साढे सात लाख महिला उधमी उनसे जुडे हुए जो ट्रेड फेयर के माध्यम से देश- विदेश में अपने उत्पाद का विक्रय करते है। हर घर से एक महिला उधमी होने चाहिए। महिलाओ का व्यापार करने से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत रहती है।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा, सामान्य आवास योजनातंर्गत **कचना फेस-02,** रायपुर में स्थित **2 बी.एच.के. फ्लैट क्र.-18, ब्लॉक नं-01, (पाचवा तल), को इस कार्यालय के पत्र क्रमांक 5297 दिनांक 22.04.2015 के द्वारा, श्री गुरूसाई राम गोविन्द राव कोना पिता श्री गोविन्द राव कोना,** के नाम स्वविक्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट के मद में सम्पूर्ण राशि जमा कर फ्लैट कि लीजडीड दिनांक 17.12.2015 को पंजीकृत करने उपरांत इस कार्यालय के पत्र क्रमांक 8195 दिनांक 26.12.2016 फ्लैट का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है।

वर्तमान में आबंटी **श्री गुरूसाई राम गोविन्द राव कोना पिता श्री गोविन्द राव कोना,** द्वारा मुख्त्यारआम **श्री दिनेश नायडू पिता स्व. आर.बी.आर. नायडू, निवासी: हाउस नं-27/130, डॉ. सक्सेना गली, न्यू शांति नगर, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती संघामित्रा दुबे पति श्री कमलेश दुबे, निवासी: 4 निलांचल विहार, कचना रेल्वे क्रासिंग के पास, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय करने के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजना, सेजबहार, रायपुर में स्थित **भवन क्र. एल.आई.जी.-1012, श्रीमती सोनिया सोनी पति श्री जितेन्द्र कुमार सोनी,** के नाम पर इस कार्यालय का आबंटन **आदेश क्रमांक 1491 दिनांक 07.03.2007** द्वारा स्वविक्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में **दिनांक 17.09.2010** को लीजडीड पंजीकृत उपरांत **दिनांक 18.10.2022** को हस्तांतरण विलेख **(फ्री-होल्ड)** निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को **क्रेता श्री राजेन्द्र तिवारी पिता स्व. श्री साधु राम, निवासी-एल.आई.जी.-505, सेजबहार, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में दिनांक 15.11.2022 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में **क्रेता श्री राजेन्द्र तिवारी पिता स्व. श्री साधु राम,** द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात् अपने नाम पर नाम दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मण्डल द्वारा निर्मित दीनदयाल आवास योजना गातापार रायपुर में **भवन क्रमांक एल.आई.जी-188, श्रीमति रश्मि वर्मा पति श्री विजय कुमार वर्मा,** के नाम स्वविक्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन के मद मे पूर्ण राशि जमा कर पंजीयन कार्यालय रायपुर से दिनांक 11.04.2014 को लीजडीड (पट्टा-विलेख) का निष्पादन करा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में **श्रीमति रश्मि वर्मा पति श्री विजय कुमार वर्मा, निवासी: अमन नगर मोवा, रायपुर, तहसील व जिला-रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री डीगेश्वर प्रसाद साहू पिता श्री देवेन्द्र साहू निवासी:- वार्ड नं.-14, हसदा, तहसील अभनपुर, जिला रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

दीनदयाल आवास योजना गातापार रायपुर में भवन क्रमांक एल.आई.जी-188, के विक्रय के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति भय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

NAVA RAIPUR ATAL NAGAR VIKAS PRADHIKARAN
Paryavas Bhawan,North Block,Sector-19, Nava Raipur Atal Nagar, Dist. Raipur-492 002, Chhattisgarh
Tel No: +91 771 2512500, Fax No.: +91 771 2512400
website: www.navaraipuratalnagar.com, http://eproc.cgstate.gov.in

E-Procurement Tender Notice

The Chief Executive Officer, NRANVP invites item rate tender for the following works

NIT No: 56/SR-CBD/EEC-V/CE(E)/NRANVP/2024-25, Nava Raipur Atal Nagar, Dist, Raipur Dated 21/11/2024

Name of Work: "Special Repair & other miscellaneous works at CBD Commercial Complex, Retail Building Complex & Other Buildings of NRANVP at Nava Raipur Atal Nagar (Chhattisgarh)".

Estimated cost: **INR 4.00 Crs.**, EMD: **INR 5,00,000/-** Period of Completion: **24 Months**

Last Time & Date of Online Submission: 15:00hrs on 12.12.2024

The E-Procurement tender documents can be downloaded from the portal (Website) http://eproc.cgstate.gov.in directly and shall be submitted online on the same website only after making on payment of bid participation fees online.

Amendment in tender, if any, will only be uploaded on the website and shall not be published in any newspaper.

Chief Engineer (Engg.)
NRANVP

SAMVAD- 42183/ 3

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./15871/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15871
वार्ड का नाम- 15 - ने. कन्हैयालाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **15** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108C0196A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SANGITA GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTOSH GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **बंटी सिंह** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. भूपेन्द्र सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./6863/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 6863
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **17** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108A00637** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHILPA SHRIVASTAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VISHAL SHRIVASTAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NITISH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NITISH KUMAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **REGISTERED PAPER** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 23 नवंबर 2024

टूरिज्म बोर्ड पर्यटन नीति के तहत जिला स्तरीय समिति के सदस्यों की बैठक

कुदरगढ़ में रोप-वे निर्माण पर्यटन स्थलों के विकास के संबंध में हुई चर्चा

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)–आज कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में कलेक्टर श्री एस जयवर्धन की अध्यक्षता में छत्तीसगढ टूरिज्म बोर्ड पर्यटन नीति 2020 के अंतर्गत जिला स्तरीय समिति के सदस्यों के साथ जिला सूरजपुर अंतर्गत विभिन्न पर्यटन स्थलों का विकास के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया था। जिसमें समिति के सदस्यों के साथ जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई।कुदरगढ़ में रोप-वे निर्माण को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। रोप-वे के निर्माण को मूर्त रूप देने के लिए नियमानुसार कार्यवाही की बात की गई। जिले के महत्पूर्ण पर्यटन स्थल का व्यापक प्रचार-प्रसार हो इसके लिए शहर के महत्वपूर्ण जगहों (बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, विश्राम गृह इत्यादि) पर पर्यटन स्थल का पोस्टर लगाया जाएगा। पोस्टर में पर्यटन स्थल का नाम व शहर के केंद्र बिंदु से पर्यटन स्थल की दूरी का चित्रण किया जाएगा ताकि लोकल लोगों के साथ-साथ बाहरी लोग भी जिले के पर्यटन स्थल से परिचित हो सकें।

बैठक में जिला स्तरीय पर्यटन समिति के (डीएलटीएस) द्वारा चिन्हांकित पर्यटन/धार्मिक स्थल खोपा देवी धाम, राष्ट्रपति भवन पण्डोनगर, रामेश्वनगर पर्यटन स्थल पर चर्चा की गई। सूरजपुर जिले में राज्य से चिन्हांकित प्रमुख पर्यटन/धार्मिक स्थल कुदरगढ़ धाम, सारासोरो, तमोर पिंगला अभ्यारण्य एवं 28 अन्य प्रमुख पर्यटन/धार्मिक स्थल में से कुमेली फॉल, बॉक, कर्करेखा सत्तीपारा इत्यादि में सुविधाओं का विस्तार, केनापारा पर्यटन स्थल के संचालन के संबंध में चर्चा की गई। इसके साथ ही पहाडगांव में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इसे पिलखा पहाड़ के रूप में विकसित किये जाने हेतु विस्तृत चर्चा की गई और इससे जूड़ी हुई व्यवहारिक चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षण किया गया। इस अवसर पर बैठक में श्री भीमसेन अग्रवाल, गणमान्य सदस्य, एसपी श्री प्रशांत कुमार ठाकुर, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

लटोरी में हुआ समाधान शिविर का आयोजन 94 आवेदन हुए प्राप्त समस्याओं को किया गया निराकरण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) – आज जिले के सूरजपुर जनपद अंतर्गत ग्राम पंचायत लटोरी में समाधान शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें आसपास के क्षेत्रवासी अपनी समस्याओ से सम्बन्धित आवेदन के साथ शिविर स्थल पर पहुंचे थे। समाधान शिविर में कुल 94 आवेदन प्राप्त हुए । इस समाधान शिविर में कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन, पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत ठाकुर और जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू सहित, एस डी एम सूरजपुर श्रीमती शिवानी जायसवाल सभी जिला स्तरीय अधिकारीगण एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

आयोजित शिविर में कलेक्टर श्री जयवर्धन ने सभी हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने की अपील की। उन्होंने हितग्राहियों द्वारा प्रस्तुत आवेदनों का अवलोकन करते हुए संबंधित विभाग को निराकरण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सभी आवेदनों पर त्वरित निराकरण के निर्देश दिये और समय-सीमा में समाधान कारक निराकरण करने की बात कही। इस अवसर पर उन्होंने सभी को आयुष्मान कार्ड बनवाने और अपडेट करने के लिए कहा ताकि शासन की स्वास्थ्य योजना का लाभ आसानी से मिल सके। इस दौरान उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि शासन सभी को पक्का आवास उपलब्ध करा रही है ऐसे में पीएम आवास योजना का लाभ सभी हितग्राही उठाएं। इसके साथ ही उन्होंने सभी उपस्थित जनों को अपने आधार कार्ड को अपडेट रखने की बात कही ताकि आसानी से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी को मिल सके। इसके अलावा उन्होंने सभी हितग्राहियों को आंगनबाड़ी में बच्चों एवं माताओं को मिलने वाली सुविधाओं का लाभ लेने के लिए भी कहा। इस अवसर पर कृषि, मत्स्य और महिला बाल विकास विभाग के विभिन्न योजनाओं के तहत सामग्रियों का वितरण भी हितग्राहियों को किया गया। साथ ही इस अवसर पर गर्भवती महिलाओं का गोदभराई संस्कार भी महिला बाल विकास विभाग की ओर से किया गया।

पुत्र की अनुकंपा नियुक्ति के लिए परेशान है महिला जी.एम. ऑपरेशन को लिखा पत्र

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)– पति की मृत्यु के पश्चात पत्नी अपने पुत्र की अनुकंपा नियुक्ति पाने हेतु भटक रही है।जी एम ऑपरेशन एस.ई.सी.एल. विश्रामपुर क्षेत्र को पत्र लिखकर अनुकंपा नियुक्ति की मांग की है।

प्राथीया तपेश्वर पति जागर साय ने आश्रित रोजगार के तहत् अनुकम्पा नियुक्ति, ग्रेच्यूटी, साल बोनस, क्रियाकरम के लिए मिलने वाली राशि की मांग की है। पत्र में उल्लेख किया है कि पति स्व. जागर आ. स्व. सुद्ध, बलरामपुर 10/12 खदान में भू.पू. केटे-5 केविनमैन के पद पर कार्यरत थे। जिनकी मृत्यु 16/03/2023 को हो गई है। कार्यरत पति कर्मचारी के मृत्यु के बाद मिलने वाली पुत्र शिवा लाल को अनुकम्पा नियुक्ति हेतु दस्तावेज दिनांक 1/08/2023 को जमा की थी। इसकी रिसिव की छायाप्रति संलग्न है। परंतु कुम्दा सहक्षेत्र के कार्मिक प्रबंधक रेशम लाल के द्वारा दो माह तक कोई कार्यवाही नही किया गया है, जिससे अक्टूबर 2023 में नया फार्मेट आ गया है, जिस कारण श्री रेशम लाल द्वारा कुछ नया दस्तावेज बनाया गया जिसमें मैं एवं मेरा परिवार के सदस्यों द्वारा आवश्यकतानुसार बुलाने पर उनके आफिस एवं उनके बंगले में जाकर तनमन एवं धन से सहयोग किया गया। पूर्व में 1/08/2023 को अनुकम्पा नियुक्ति हेतु दस्तावेज जमा किया था अगर समय रहते कार्यवाही किया जाता तो दोबारा दस्तावेज बनाने की आवश्यकता नहीं होती। काफी आर्थिक एवं मानसिक क्षति हो रही है एवं 18 माह लगभग हो गये आज तक अनुकम्पा नियुक्ति की फाईल विश्रामपुर जी.एम. नही भेजा गया है और ग्रेच्यूटी लगभग 20,00000/-, साल बोनस एवं क्रियाकरम के लिए मिलने वाली राशि लगभग 1,25000/- रू. अभी तक नहीं मिला है। जिससे लगभग 1.5 से 2.00 लाख रूपये का व्याज का आर्थिक नुकसान हुआ है और अभी विलंब होगा तो और ज्यादा आर्थिक नुकसान होगा। आये दिन आफिस एवं बंगले में बुलाकर दिन भर बैठाये रहते है और कोई कार्य नहीं होता है और बाद में बोल दिया जाता है कि जाओ तथा कभी-कभी बुलाया जाता है और आने पर पता चलता है कि बिलासपुर, रायपुर या जबलपुर गये है। जिससे मैं एवं मेरा परिवार मानसिक एवं शारीरिक रूप परेशान हो रहा है। जिसकी सूचना पूर्व में भी मुख्य महाप्रबंधक विश्रामपुर को आवेदन के माध्यम से दे चुकी है।गंभीर आर्थिक क्षति तथा अनुकम्पा नियुक्ति को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द अनुकम्पा नियुक्ति एवं ग्रेच्यूटी, साल बोनस एवं क्रियाकरम के लिए मिलने वाली राशि जल्द से जल्द दिलाने की कृपा करें।

महिला ने अन्य कर्मचारियों को पूर्व में दी गई अनुकम्पा नियुक्ति आवेदन की छायाप्रति के साथ प्रतिलिपि मुख्य महाप्रबंधक, बिश्रामपुर क्षेत्र।, सह-क्षेत्र प्रबंधक कुम्दा सह-क्षेत्र को भी प्रेषित की है।

कलेक्टर अवनीश शरण ने सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का किया निरीक्षण

बिलासपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर अवनीश शरण ने आज कोनी में सिम्स की विस्तारित सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का निरीक्षण किया। उन्होंने कर्मचारियों की भरती प्रक्रिया जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। मरीजों की सुविधा के लिए रेड क्रॉस मेडिकल दुकान भी जल्द शुरू करने कहा। यहां अब तक 900 से ज्यादा मरीजों का इलाज किया गया है। इस अवसर पर सिम्स के डीन डॉ. रमणेश मूर्ति, डॉ. बी.पी. सिंह सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे। कलेक्टर ने पूरे अस्पताल का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने यहां संचालित यूरोसर्जरी, पल्मनोलॉजी, न्यूरोसर्जरी और जनरल मेडिसिन ओपीडी का निरीक्षण किया। बताया गया कि अस्पताल में प्रतिदिन लगभग 40 ओपीडी होती है। कलेक्टर ने न्यूरोसर्जरी, जनरल मेडिसिन, सिटीस्कैन, रेडियोलॉजी, इमरजेंसी सहित पूरे अस्पताल का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने अस्पताल में होने वाले सिटीस्कैन के बारे में भी जानकारी ली। बताया गया कि प्रतिदिन 4 से 5 मरीजों का सिटी स्कैन हो रहा है। कलेक्टर ने अस्पताल में नियमित साफ-सफाई एवं रख-रखाव करने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि 200 करोड़ की लागत से यह 11 मंजिला भव्य अस्पताल ढ़ाई एकड़ में तैयार किया गया है। अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इस अस्पताल में बिलसापुर सहित सरगुजा संभाग के लोगों को भी बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिलेंगी। 240 बिस्तर वाले इस अस्पताल में 70 आईसीयू एवं आईसीसीयू बेड है। इस अस्पताल में 8 मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर का भी निर्माण किया गया है। इस अस्पताल में सिटीस्कैन, एमआरआई, डिजिटल एक्स-रे, कलर डॉप्लर, टीएमटी मशीन जैसी सुविधाएं उपलब्ध है।

एक वृक्ष मां के नाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आह्वान तो दूसरे तरफ रामानुजन नगर वन परिक्षेत्र में वनों की अंधाधुंध कटाई कर बन रहा है रेगिस्तान

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (विश्व परिवार)–देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक वृक्ष मां के नाम लगाने का आह्वान किया था तो वही छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देवसाय दिन की शुरुआत मां के नाम एक पौधा लगाकर करते हैं ताकि प्रदेश की जनता को पर्यावरण बचाने के लिए जागरुक कर सके लेकिन उनके ही सरकारी महकमे के अधिकारी कर्मचारियों के नाक के नीचे खुलेआम जंगलों को काटा जा रहा है वन विभाग के अधिकारी आंखें बंद कर देख रहे हैं छिन्दिया रंपा जंगल में सागौन प्लांट लगा है वह लगभग 20 हेक्टेयर में फैला है जब वन अमला ही सागौन के बेशक़ीमती पेंड काटने में लगा है तो ऐसे में सुरक्षा कौन करेगा हरे भरे सागौन के बेस कीमती पेड़ों की अंधाधुंध कटाई जारी है इसकी गवाही ताजा टूट की यह तस्वीर खुद बयां कर रही है ऐसी स्थिति में इन वनों के रखवालो पर सवाल खड़े हो रहे हैं कि जब मुख्यालय से महज 5 किलोमीटर की दूरी में लगे जंगलों की रखवाली नहीं हो पा रही है तो पूरे वन परिक्षेत्र का क्या हाल होगा इसकी महज कल्पना ही की जा सकती है पेड़ों की सुरक्षा नहीं कर पा रहा वन अमला वन परिक्षेत्र में सिर्फ कार्यवाही के नाम पर खाना पूर्ति कर रहे हैं धरातल में कोई काम नजर नहीं आ रहा है मेंन रोड से लगे सागौन के जंगलों को अंदर से खोखला वन माफ़ियाओं के द्वारा किया जा रहा है उन पर शिकंजा कसने के लिए वर्तमान समय पर अधिकारी असफल नजर आ रहे हैं अब सवाल यह उठता है कि वन अमला जंगल में लकड़ी जप्त करते हैं तो नियम के तहत कटे हुए ठूट में हैमर और उसकी गोलाई नाप कर पीवार नंबर लिखकर जप्ती बनाना है और डिपो में जमाकर चालान पेश करनाहोता है लेकिन सिर्फ कागजी खाना पूर्ति कर वन हमला अपना पल्ला झाड़ लेते हैं इससे साफ जाहिर होता है कि बड़े अधिकारियों को खुश करने के लिए वन हमला बेस कीमती लड़कियों को तस्करी कर अपने अधिकारियों को मोटी रकम देते हैं तभी तो वन विभाग के उच्च अधिकारी इन पर कोई बड़ी कार्रवाई नहीं करते रामानुज नगर परिक्षेत्र वन विभाग का विडंबना है कि यहां के रेंजर श्री रामचंद्र प्रजापति ठेकेदारी करने में व्यस्त रहते हैं वह कभी भी सागौन प्लांट के जंगल में झांकने तक नहीं जाते और ना ही कभी आसपास के जंगल में जाते हैं इसका फायदा छोटा अधिकारी उठाते हैं वर्जन

हमारे पास जप्त लकड़ी का कोई रिकार्ड नहीं -डिप्टी रेंजर कृष्ण टोप्पो

इस संबंध में डिप्टी रेंजर कृष्ण टोप्पो से पूछा गया कि अभी फिलहाल में जो जंगल में सागौन प्लांट से लकड़ी कटा है और उसकी लकड़ी जो जप्त किया गया है उसका चालान दीवार नंबर क्या है उन्होंने गोल-गोल जवाब देकर बात को टालते हुए कहा कि हम जप्त कर पीवार नंबर और चालान अंबिकापुर भेज दिए हमारे पास दस्तावेज नहीं है जबकि एक प्रति वन विभाग के मुख्यालय में रहता है इससे साफ जाहिर हो रहा है कि जंगल में लकड़ी तस्करी का खेलका जमकर हो रहा है

संक्षिप्त समाचार

हाथियों के दल की आमद से ग्रामीणों में दहशत

अंबिकापुर(विश्व परिवार)। 35 हाथियों का बड़ा दल सरगुजा और बलरामपुर जिले की सीमावर्ती क्षेत्रों में स्वछंद विचरण कर रहा है। सरगुजा के लुंड्रा और बलरामपुर जिले के शंकरगढ़ वन परिक्षेत्र के सीमावर्ती क्षेत्र में जमे हाथियों द्वारा धान की फसल को नुकसान पहुंचाया जा रहा है।एक साथ 35 हाथी होने के कारण इनकी निगरानी में भी परेशानी हो रही है। रात के अंधेरे में हाथियों से जनहानि रोकना वन विभाग के लिए कड़ी चुनौती साबित हो रही है। 35 हाथियों का यह दल सबसे पहले प्रतापपुर वन परिक्षेत्र में पहुंचा था। इस कारण इस दल के तमोर पिंगला अभयारण्य क्षेत्र से मैदानी इलाके में आने की संभावना है। हाथियों का यह दल प्रतापपुर वन परिक्षेत्र के गांवों से होते हुए राजपुर वन परिक्षेत्र में घुसा था। धान-गन्ना की फसल को नुकसान पहुंचाते हुए सभी 35 हाथी राजपुर के चांची जंगल के समीप अंबिकापुर- रामानुजंगज राष्ट्रीय राजमार्ग को पार कर आगे बढ़े थे। तीन दिन पहले यह दल सरगुजा जिले के लुंड्रा वन परिक्षेत्र में प्रवेश कर गया था। चन्द्रेश्वरपुर,जोरी, बिल्हमा क्षेत्र में विचरण करते हुए सभी हाथी मंगलवार की रात राजपुर वन परिक्षेत्र के कोरगी-अमदरी की ओर चला गया था लेकिन भोर होते ही हाथी लुंड्रा और शंकरगढ़ वन परिक्षेत्र की सीमा पर जारगिम सर्किल में प्रवेश कर गए थे। हाथी जिस ओर भी जा रहे हैं वहां धान , गन्ना के अलावा दूसरी फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। अत्यधिक संख्या होने के कारण जिस खेत से होकर ये गुजर रहे हैं वह नष्ट हो जा रही है। वन विभाग के अधिकारी, कर्मचारी सारी रात हाथियों की निगरानी में लगे हुए हैं। हाथियों के विचारण क्षेत्र से लगे गांव में लोगों को सतर्क किया जा रहा है।

ट्रेलर ने कार को, फिर स्वराज माजदा को ठोकर मारी

कोरबा(विश्व परिवार)। नेशनल हाईवे 130 पर आधी रात को एक भीषण सड़क हादसा हुआ। तेज रफ्तार ट्रेलर ने पहले एक कार को ठोकर मारी, फिर स्वराज माजदा को भी ठोकर मार दी। घटना में ट्रेलर ड्राइवर गाड़ी से कूदकर भाग गया। इसी दौरान, एक और तेज रफ्तार आ रही ट्रेलर सीधे खड़े ट्रेलर में जा घुसी। घटना में ट्रेलर ड्राइवर गाड़ी के केबिन में घायल होकर फंस गया। रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद लगभग 2 घंटे में उसे निकाला गया। वह गंभीर रूप से घायल था। इस हादसे के कारण लगभग 3 घंटे तक कटघोरा से अंबिकापुर मार्ग पर जाम लगा रहा। डायल 112 और कटघोरा तथा बांगो पुलिस ने मिलकर जाम को बहाल करने में मदद की। हादसे में कार कटघोरा के वार्ड 3 के पार्षद की बताई जा रही है। कार और स्वाराज माजदा के ड्राइवर को हल्की चोटें आईं, लेकिन कार का आधा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

केवरा के किराना दुकान से अवैध धान की जब्ती

सूरजपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के निर्देश पर जिले के सहकारी समितियों में अवैध धान की आवक, रिसाइक्लिंग, कोचियों-बिचौलियों द्वारा धान के अवैध विक्रय को रोकने के लिए राजस्व अमला सक्रिय रूप से कार्य करा है। प्रतापपुर एसडीएम श्रीमती ललिता भगत द्वारा लगातार दो दिन अवैध धान जब्ती का कार्यवाही की गई है। जिसके तहत आज ग्राम केवरा के किराना दुकान के पीछे बने गोदाम से 1300 बोरी (500 क्विंटल) धान की जब्ती की गई। जानकारी लेने पर दुकान के संचालक के पास मंडी लाइसेंस था परंतु उसके द्वारा जारी लाइसेंस के विरूद्ध तय सीमा से अधिक धान का भण्डारण गोदाम में पाया गया। जिसे लेकर दुकान संचालक के पास कोई संतोषजनक जवाब नहीं था। टीम के द्वारा प्रकरण बनाकर अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रस्तुत किया गया है जिसमें मंडी अधिनियम के तहत आगे की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी।

रूडूकेला में अलसी फसल के लिए आदान सामग्री वितरित

रायगढ़(विश्व परिवार)। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अतंर्गत जिले में तिलहन फसल का क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि के लिये ग्राम-रूडूकेला, वि.ख.-लैलूंगा अलसी फसल किस्म-आरएलसी-148 की 50 एकड़ क्षेत्रफल में समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लिया गया है। चूंकि जिले में अलसी फसल का क्षेत्रफल दिनों दिन कम होते जा रहा है जिससे विलुप्त होने के कगार पर है। जिसको ध्यान में रखते हुये किसानों को प्रोत्साहित कर इस वर्ष अलसी फसल का क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने हेतु मुख्य अथिति जनपद सदस्य श्री सुकदेव सिदार के द्वारा किसानों को अलसी बीज एवं अन्य आदान सामग्री का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. के.के. पैकरा, वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) द्वारा अलसी फसल के उन्नत उत्पादन तकनीक एवं फसल विविधिकरण के बारे में विस्तार से बताया गया। जिससे कृषकों के आय में वृद्धि हो सके।

संपादकीय

अपनी सेहत को दांव पर लगाने पर लोग आमादा

लोग खुद ही अपनी सेहत को दांव पर लगाने पर आमादा हों, तो उस समाज को आखिर कौन बचा सकता है? डॉक्टर चेतावनी देते-देते थक गए हैं कि प्रदूषण जानलेवा भी हो सकता है। मगर जागरूकता और जवाबदेही का अभाव जस-का-तस है। छठ के मौके पर दिल्ली में यमुना के प्रदूषण पर आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच तू तू-मैं मैं अब इतनी आम हो गई है कि लोग उससे ऊबने लगे हैं। मुद्दा है कि जब यह स्थायी समस्या है, तो छठ के बाद उस पर इन दोनों पार्टियों का ध्यान क्यों नहीं होता, जिनकी केंद्र और (केंद्र शासित) प्रदेश में सरकारें हैं? फिर सामान्य दिनों में नागरिक समाज को भी इसकी कोई फिक्र नहीं होती। यही हाल दिल्ली और आसपास के इलाकों में इस सीजन में बढऩे वाले वायु प्रदूषण की है। फिर वही हुआ। एक और दिवाली आई और फिर दिल्ली एनसीआर स्मॉग की चादर से ढक गया। पटाखों पर प्रतिबंध सिर्फ कागज पर रहा। लोगों ने जितनी मांग की, उतने पटाखे दुकानों में बिके, लोगों ने खरीदे और मन भर कर जलाए भी। अब लोग खुद ही अपनी सेहत को दांव पर लगाने पर आमादा हों, तो उस समाज को आखिर कौन बचा सकता है? डॉक्टर चेतावनी देते-देते थक गए हैं कि प्रदूषण सिर्फ थोड़ी-सी खांसी ही नहीं देता, बल्कि यह जानलेवा तक साबित हो सकता है। मगर भारत में जागरूकता और जवाबदेही का अभाव जस-का-तस है। अब इस क्रम में एक अंतरराष्ट्रीय पहलू भी जुड़ा है। पाकिस्तान भी वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव झेल रहा है। खासकर लाहौर शहर बुरी तरह प्रभावित हुआ है। यह कम दिलचस्प नहीं कि प्रांत की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने लाहौर में खराब होती हवा के लिए भारत को जिम्मेदार ठहरा दिया है। उनका कहना है कि भारत से आने वाली हवा अपने साथ प्रदूषण लेकर आती है, जिससे लाहौर की हवा खराब हो रही है। जबकि खुद पाकिस्तान में तैयार रिपोर्टों में कहा गया है कि खराब वायु गुणवत्ता के प्रमुख कारणों में उद्योगों और वाहनों से निकलने वाला धुआं शामिल है। इसके अलावा खेती की पद्धति, जैव ईंधन और कचरे को जलाना और धूल इसके अन्य पहलू हैं। मगर गंभीर समस्या पर अगंभीर और बे-ईमान रुख की संस्कृति पाकिस्तान में भी कोई कम नहीं है। बहरहाल, ऐसे नजरियों से कुछ हासिल नहीं होगा, यह बात हर जागरूक व्यक्ति अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

पाकिस्तान की राह पर कनाडा में खालिस्तानी

राकेश सैन

कनाडा में खालिस्तानी गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं और इससे वहां रह रहा भारतीय समुदाय विशेषकर हिन्दू समाज इससे सर्वाधिक पीड़ित नजर आरहा है। तीन नवम्बर को वहां ब्रैम्पटन के मन्दिर में खालिस्तान के समर्थकों द्वारा हिन्दू मन्दिर में घुसकर लोगों के साथ हिंसा की गई। कनाडा में जिस तरीके से खालिस्तानी अलगाववादियों व आतंकी तत्वों को खुल कर मनमानी करने का अधिकार मिलता जा रहा है और इस पर वहां की सरकार मौन साधे बैठी है उससे लगने लगा है कि दुनिया में पाकिस्तान के बाद कनाडा ऐसा देश है जो आतंकवाद को आतंकवाद को अपनी स्टेट पॉलिसी में शामिल करता जा रहा है। अपने राजनीतिक स्वार्थों की खातिर कनाडा की ट्रुडो सरकार 'गुड टेरोरिज्म-बैड टेरोरिज्म' का भेद करने की गलती कर रही है। कनिष्क विमान जैसी भयंकर आतंकी हमले की तपिश झेल चुके कनाडा को बहुत ही जल्द खालिस्तानी आतंकी भस्मासुर बने नजर आ सकते हैं, क्योंकि पाकिस्तान इसकी उदाहरण है कि दूसरों के घरों चिंगारी फेंकने वालों के खुद के घर में आग कैसे लगती है। कनाडा में खालिस्तानी गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं और इससे वहां रह रहा भारतीय समुदाय विशेषकर हिन्दू समाज इससे सर्वाधिक पीड़ित नजर आरहा है। तीन नवम्बर को वहां ब्रैम्पटन के मन्दिर में खालिस्तान के समर्थकों द्वारा हिन्दू मन्दिर में घुसकर लोगों के साथ हिंसा की गई। वहां परिवार सहित आए निहत्थे लोगों पर खालिस्तानी प्रदर्शनकारियों ने लाठियां बरसाईं और आरोप है कि पुलिस के कुछ जवानों ने भी हिंसक भीड़ का साथ दिया। कनाडा में हिन्दू मंदिरों को निशाना बनाने की यह कोई पहली घटना नहीं है। इसी वर्ष जुलाई में एडमॉण्टन में स्वामीनारायण मन्दिर में तोडफ़ोड़ की गई थी। मन्दिर के गेट और पीछे की दीवार पर भारत विरोधी और खालिस्तान समर्थक पोस्टर चिपका दिए गए थे। इस पर आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की तस्वीर भी लगी थी। सरी वेंकुवर का लक्ष्मी नारायण मन्दिर ब्रिटिश कोलम्बिया प्रांत का सबसे पुराना और सबसे बड़ा हिन्दू मन्दिर है। यहां भी पिछले साल तोडफ़ोड़ हुई थी। 2023 में विण्डसर में एक हिन्दू मन्दिर को क्षतिग्रस्त किया गया था, जिसकी व्यापक निन्दा हुई और कनाडाई और भारतीय दोनों अधिकारियों ने कार्रवाई की मांग की थी। इसी साल जनवरी में वहां गौरीशंकर मन्दिर में तोडफ़ोड़ की गई। जनवरी में ही भगवान जगन्नाथ मन्दिर में भी तोडफ़ोड़ की गई। मिसिसागा हिन्दू हेरिटेज में मुख्य कार्यालय व दानपेटी में तोडफ़ोड़ की गई। जुलाई में रिचमण्ड हिल व महात्मा गांधी जी की प्रतिमा में तोडफ़ोड़ की। पिछले साल अक्तूबर में डरहम में तीन हिंदू मंदिरों में तोडफ़ोड़ की गई। दिसम्बर 2023 में वेंकुवर में लक्ष्मी नारायण मन्दिर के प्रधान श्रीशेष के घर पर 14 गोलियां बरसाई गईं। लक्ष्मी नारायण मन्दिर के बाहर रास्ता बन्द कर तनाव पैदा किया गया। पिछले साल ही दिसंबर में किचनर के राम धाम मन्दिर में तोडफ़ोड़ की गई। वेंकुवर में नवरात्रों पर मन्दिर में चल रहे कार्यक्रम में खलल डालने की कोशिश, खालिस्तानियों ने मन्दिर के बाहर नारे लगाए। इस साल जनवरी में ब्रैम्पटन में हिन्दू मन्दिर की दीवार पर भारत विरोधी नारे लिखे गए। फरवरी में ओकविले में श्री वैष्णो देवी मंदिर में तोडफ़ोड़ की गई। कनाडा के हिन्दुओं पर खालिस्तानियों के इस हमले की पूरी दुनिया में निंदा हो रही है। कनाडा में भारतीय मूल के सांसद चंद्र आर्य ने इस हमले को लेकर कहा है कि अब खालिस्तानियों ने हद पार कर दी है। वहीं, कनाडा के बीसी में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। हिन्दू समुदाय के लोग सडक़ों पर आए और कनाडा सरकार व खालिस्तानियों के खिलाफ प्रदर्शन किया। बीसी की पुलिस के साथ प्रदर्शनकारियों का टकराव भी हुआ, रोचक बात है कि खालिस्तानी हमलावरों का साथ देने वाली कनाडा पुलिस ने यहां पर कई हिन्दुओं को घसीटकर न केवल पीटा बल्कि उठाकर गाडिय़ों में ले गए। भारत सरकार ने ब्रैम्पटन में खालिस्तानी झंडे लेकर आये प्रदर्शनकारियों की ओर से एक हिन्दू मन्दिर में लोगों के साथ की गई हिंसा की कड़े शब्दों में निंदा की है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि हम ब्रैम्पटन, ओंटारियो में हिन्दू सभा मन्दिर में चरमपंथियों और अलगाववादियों की ओर से की गई हिंसा की निंदा करते हैं। इस बीच ओटावा स्थित भारतीय उच्चायोग ने भी एक कड़ा बयान जारी कर हिन्दू सभा मन्दिर पर भारत विरोधी तत्वों की ओर से किए गए हमले की निंदा की। कनाडा में भारत विरोध में जो कुछ हो रहा है उसकी पृष्ठभूमि तो दशकों पहले से तैयार हो रही थी, इस बात का पता कैप्टन अमरेन्द्र सिंह जो पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री हैं, उनके ब्यान से होता है। कै. अमरेन्द्र सिंह लिखते हैं 'कुछ वर्ष पूर्व जब मैं पंजाब का मुख्यमंत्री था, मैं उस देश में सिख उग्रवाद के प्रति कनाडा के दृष्टिकोण से अवगत था जो तेजी से बढ़ रहा था परन्तु जिस पर ट्रूडो ने न केवल आंखें मूंद लीं बल्कि अपना राजनीतिक आधार बढ़ाने के लिए ऐसे लोगों को संरक्षण दिया। उन्होंने अपने रक्षामंत्री, एक सिख को पंजाब भेजा पर मैंने उससे मिलने से इनकार कर दिया क्योंकि वह खुद विश्व सिख संगठन का सक्रिय सदस्य था, जो उस समय खालिस्तानी आंदोलन की मूल संस्था थी और जिसकी अध्यक्षता उसके पिता ने की थी। कुछ महीने बाद ट्रूडो भारत आए थे और उन्होंने मुझसे मिलने से इनकार कर दिया था। तब तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने ट्रुडो से बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा था कि जब तक आप मुख्यमंत्री से नहीं मिलेंगे, तब तक आप पंजाब का दौरा नहीं कर सकते। हम अमृतसर में मिले, उनके रक्षामंत्री सज्जन सिंह के साथ। मैंने उन्हें कनाडा से पंजाब की समस्याओं के बारे में खुलकर बताया कि कनाडा खालिस्तानी अलगाववादी आंदोलन का स्वर्ग बन गया, साथ ही वहां बंदूकों, ड्रग्स व गैंगस्टरों का बोलबाला हो गया है। परन्तु वहां की सरकार ने इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। कनाडा में हिंदुओं पर हमले की घटना को लेकर प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपने ही देश में घिर गए हैं। पीपुल्स पार्टी आफ कनाडा के नेता मैक्सिम बर्नियर ने प्रधानमंत्री ट्रूडो और विपक्षी नेताओं जगमीत सिंह व पियरे पोलीवरे की प्रतिक्रिया की आलोचना की और आरोप लगाया कि इन नताओं ने हमलावरों को खालिस्तान समर्थकों के रूप में पहचानने से परहेज किया, क्योंकि उन्हें अपने वोट बैंक की चिंता है। बर्नियर ने इन नेताओं को कायर करार दिया है। बर्नियर ने लिखा कि इनमें से कोई भी कायर उन खालिस्तान समर्थकों का नाम लेने की हिम्मत नहीं करता, जो हिंसा कर रहे हैं। वे कुछ मतदाताओं को नाराज करने से डरते हैं। कनाडा के पूर्व मंत्री उज्जल दोसांझ ने कहा कि प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो सामाजिक और राजनीतिक रूप से मूर्ख हैं। वह यह कभी भी समझ नहीं पाए कि ज्यादातर सिख धर्मनिरपेक्ष हैं और खालिस्तान से उनका कोई लेना-देना नहीं है। कनाडा में हिन्दू मंदिर पर हमला कनाडा सरकार समर्थित खालिस्तानी तत्वों द्वारा एक सोची समझी साजिश के तहत किया गया है। कनाडा में अगले वर्ष होने वाले चुनावों को देखते हुए आशंका है कि ऐसे हमले अभी जारी रहेंगे। वोट बैंक की राजनीति के लिए ही जस्टिन ट्रुडो बिना प्रमाण के ही वहां मारे गए आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का आरोप भारत पर मढ़ रहे हैं। कनाडा की ट्रूडो सरकार भारत विरुद्ध जो नीति अपनाकर चल रही है वह कनाडा के लिए आत्मघाती साबित होगी। ट्रूडो अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए कनाडा के हितों से खिलवाड़ कर रहे हैं जिसका परिणाम कनाडावासियों को भविष्य में भुगतना पड़ेगा। इसके लिए उन्हें पाकिस्तान से सबक लेना चाहिए जो भारत में आतंकवाद निर्यात करते-करते खुद ही इसका शिकार हो कर रह गया।

आलेख

जलवायु संकट अभी भी मुद्दा नहीं

श्रुति व्यास

जलवायु संकट देश, नस्ल, धर्म और जाति के भेद के बिना सभी को मार रहा है, बरबादी की ओर ले जा रहा है लेकिन देशों और नेताओं के लिए अभी भी मुद्दा नहीं बना है। वर्ष 2024 रिकार्ड बना रहा है। रोजाना जबरदस्त गर्मी और विनाशकारी तूफान की खबरें आ रही है। लोगों की जिंदगी और जीविका के साधन ताश के पत्तों के ढेर की तरह ढहते दिख रहे है। इस साल गर्मी के मौसम में ऐसे मौके भी आए जब सब कुछ नष्ट होना लगभग अवश्यंभावी दिख रहा था। मौसमी उन्माद के साथ-साथ बीमारियों में भी बढ़ोतरी है। बीमारियां अजीब और अप्राकृतिक है। हाल में हमारे पारिवारिक चिकित्सक ने बताया कि इस प्रकार का डेंगू फैल रहा है जिसमें सिर्फ प्लेटलेट्स की संख्या ही नहीं घटती बल्कि एक दिन बुखार आता है और उसके बाद कई दिनों तक नहीं आता और एसजीपीटी और एसजीओटी (लीवर की स्थिति बताने वाले दो हारमोन) के स्तर में तेज वृद्धि होती है। इसलिए यदि आपको आज बुखार है तो मेहरबानी करके कल ही अपनी जांच करवा लें। जोखिम उठाना ठीक नहीं। काफी जटिल स्थितियां का दौर है। और कोई भी इन जटिलताओं की मूल वजह ङ्क जलवायु में बदलाव ङ्क को गंभीरता से लेने के लिए तैयार नहीं है। न तो राजनैतिक बहस-मुबाहिसों में और न चुनावी चर्चाओं में इसका ज़िक्र होता है। पिछली गर्मियों में हुए हमारे आम चुनाव के दौरान जलवायु संकट चर्चा का मुद्दा नहीं था। इन दिनों दो राज्यों में चुनाव हो रहे है, लेकिन किसी भी छोटे-बड़े राजनैतिक दल या उसके किसी नेता ने इस बारे में कुछ भी नहीं कहा है। महाराष्ट्र एक ऐसा राज्य है जिसे जलवायु परिवर्तन का घातक प्रभाव झेलना पड़ा है ङ्क ग्रामीण क्षेत्रों में बार-बार पडऩे वाले सूखे से लेकर शहरी इलाकों में आने वाली बाढ़ तक। लेकिन वहां भी नौकरियाँ, आरक्षण, मुफ्त अनाज और साम्प्रदायिकता ही मुख्य मुद्दे हैं। यदि हम अपेक्षाकृत बड़े कैनवास पर बात करें तो ट्रंप के दुबारा चुनाव जीतने से सीओपी29 (संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन) और भविष्य में होने वाले जलवायु सम्मेलनों पर अनिश्चिता के काले बादल घिर आए हैं। फिलहाल वर्ष का वह समय है जब दुनिया भर के नेता, वैज्ञानिक, उद्योगपति, स्वयंसेवी संगठनों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता अजरबेजान के बाकू शहर में एकत्रित होकर धरती पर आपके और हमारे भविष्य के बारे में विचार कर रहे हैं। वे शुद्ध पानी और विशुद्ध वाइन की चुस्कियां लेते हुए वैश्विक तापमान में वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखने के लिए ग्रीन हाउस गैसों का उर्त्सजन कम करने के बारे में चिंतन-मनन कर रहे हैं। सीओपी की यह बैठक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें धन और निवेश जुटाने का मुद्दा प्रतिनिधियों के सामने होगा। सन 2009 में अगले 15 सालों में क्लाइमेट चेंज संबंधी काम के लिए 100 अरब डॉलर आवंटित किये गए थे। इस आवंटन को खर्च करने की सीमा 2024 के अंत में समाप्त हो जाएगी। जाहिर है कि विकासशील देशों को हरित ऊर्जा स्त्रोत विकसित करने और अपेक्षाकृत गर्म धरती के साथ तालमेल बिठाने के लिए धन उपलब्ध करवाना ज़रूरी है। और अभी तो इसके लिए धन की व्यवस्था ही नहीं है। कोई बड़ा समझौता होने की उम्मीद बहुत कम है। पहले से ही सीओपी में कड़वाहट घुल चुकी है। पापुआ न्यू गिनी ने यह कहते हुए सीओपी29 का बहिष्कार करने की घोषणा की है कि %यह समय की बर्बादी है' ।उसका तर्क है कि %साल दर साल बड़ी मात्रा में प्रदूषणकारी गैसों का उर्त्सजन करने वाले देश अपने वायदों पर खरा उतरने में असफल हैं। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के भी सम्मेलन में शामिल नहीं होने की संभावना है।आशंका है कि जिन नेताओं के बड़े फैसलों की उम्मीद की जा रही थी, वे नहीं हो पाएंगे। इसके अलावा, डोनाल्ड ट्रंप की जीत का असर भी दिखेगा जो जलवायु परिवर्तन को एक कोरी धमकी' बताते हैं और ऐसी अपेक्षा है कि वे राष्ट्रपति का पद संभालते ही अमेरिका के ऐतिहासिक पेरिस समझौते से हटने के अपने पिछले कार्यकाल में लिए गए निर्णय को दुहराएंगे। कुछ दिन पहले सीओपी29 के मुख्य कार्यकारी अधिकारी इल्योर सोल्तानोव, जो अजरबेजान के ऊर्जा उपमंत्री भी हैं।

साहित्य के नाम पर मनोरंजन का मंच

विमल कुमार

पिछले साल हिंदी के प्रख्यात लेखक एवम संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी ने इसलिए इस समारोह का बहिष्कार किया था कि उनसे आयोजकों ने पूछा था कि वे पहले सूचित करें कि वे मंच पर क्या बोलेंगे। लेकिन इस बार आइटम गर्ल को बुलाए जाने से विवाद अधिक है।ज् साहित्य के नाम पर मनोरंजन का मंच सजाने पर उस मंच की शोभा बढ़ाने की बजाय अगर लेखक जन आंदोलनों में शामिल हों और लेखन, पठन का अपना मंच सजाएं तो क्या वह ज्यादा बेहतर नहीं होगा? पिछले कुछ दिनों से हिंदी साहित्य की दुनिया में हंगामा बरपा हुआ है। एक टीवी चैनल के साहित्यिक कार्यक्रम में लेखकों के साथ-साथ बॉलीवुड के सितारों को बुलाए जाने के कारण सोशल मीडिया पर यह हंगामा मचा हुआ है। इस बीच पिछले दिनों दो लेखक संगठनों के दो पदाधिकारियों ने इस्तीफा भी दे दिया, जिससे इस मामले ने अधिक तूल पकड़ लिया। एक लेखक के बारे में कहा जा रहा है कि उसने टीवी चैनल के साहित्योत्सव में जाने पर अपने मित्र लेखक द्वारा तंज किए जाने के कारण इस्तीफा दिया है। जो लोग इस तरह के समारोहों में जा रहे हैं उनका तर्क है कि लेखकों को हर मंच पर जाना चाहिए और इस तरह जनता से जुडऩा चाहिए क्योंकि हमारे लेखक संगठन जनता से नहीं जुड़े हैं। इन लेखकों का कहना है कि हम किसी भी मंच पर जाएं लेकिन हमें अपनी बात खरी-खरी कहनी चाहिए। लेकिन जो लोग इस टीवी चैनल के साहित्योत्सव के विरोधी हैं उनका तर्क है कि अगर बॉलीवुड के लोगों को बुलाना है तो साहित्य की आड़ में यह क्यों किया जा रहा, इसे %साहित्य आज तक' की बजाय मनोरंजन आज तक' के नाम से किया जाए। आखिर साहित्य के जलसे में आइटम गर्ल को क्यों बुलाया जा रहा। उनका तर्क यह भी है कि इस तरह के टीवी चैनलों के मंच सांप्रदायिक लोगों द्वारा संचालित हैं और वह साहित्य को बाजार बनाने में लगे हुए हैं। इसलिए उनके मंच से उनके खिलाफ बात नहीं कहीं जा सकती और अगर किसी ने कहा भी तो उसका व्यापक असर नहीं होने वाला है क्योंकि ज्यादातर वक्ता बाजार के समर्थक ही हैं। पिछले साल हिंदी के प्रख्यात लेखक एवम संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी ने इसलिए इस समारोह का बहिष्कार किया था कि उनसे आयोजकों ने पूछा था कि वे पहले सूचित करें कि वे मंच पर क्या बोलेंगे। लेकिन इस बार आइटम गर्ल को बुलाए जाने से विवाद अधिक है। अब हिंदी के लेखकों में ध्रुवीकरण भी हो गया है। लेखिकाओं में भी विभाजन हो गया है। एक वर्ग आइटम गर्ल को बुलाए जाने का समर्थक है तो एक वर्ग विरोधी। इस तरह साहित्य की दुनिया में इन दिनों उथल-पुथल अधिक है। हिंदी के लेखकों का एक धड़ा, जिनमें कुछ प्रगतिशील और कलावादी भी हैं, वह इस समारोह में भाग ले रहा है, जबकि एक धड़ा उसका लगातार विरोध कर रहा है। भाग लेने वालों में पुरुषोत्तम अग्रवाल, अरुण कमल और गौहर राजा जैसे लोग हैं तथा बाबुषा कोहली, अनुराधा सिंह और लवली गोस्वामी एवम जोशना बनर्जी जैसी कवयित्रियां भी। कुछ साल पहले इसी टीवी चैनल के साहित्यिक कार्यक्रम में हिंदी के प्रगतिशील जनवादी कवि राजेश जोशी के भाग लेने पर काफी तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। लेकिन इसके बावजूद जनवादी लेखक इस समारोह में जाते रहे। अब प्रगतिशील लेखक संगठन ने पिछले दिनों चंडीगढ़ में एक प्रस्ताव पारित कर कॉरपोरेट के समारोहों में भाग लेने से लेखकों को मना किया है। पर दो अन्य वाम लेखक संगठनों ने इस तरह का प्रस्ताव नहीं पारित किया है। आखिर क्या कारण है कि इस तरह के आयोजन को लेकर हिंदी में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है? पिछले 10-15 वर्षों से हिंदी में लिट् फेस्ट की संख्या काफी बढ़ी है और उनमें हिंदी के लेखक बुलाए जा रहे हैं। कहा यह जा रहा है कि जिन लोगों को लिट् फेस्ट में नहीं बुलाया जा रहा है वह अपनी कुंठा के कारण उसका विरोध कर रहे हैं। लेकिन हिंदी जगत में कुछ ऐसे लेखक हैं, जो ऐसे मंचों पर कभी जाते ही नहीं। वह इन मंचों को तमाशाई, अगम्भीर, उत्सव धर्मी अधिक मानते हैं। इन मंचों से कायदे की कोई बात नहीं कहीं जा सकती है और न सुनी जा सकती है। लेकिन लेखकों का एक तबका यह कहता है कि हमें बाजार से परहेज नहीं करना चाहिए। आखिर हमारी किताबों को बाजार में ही बिकना है इसलिए अगर हम अधिक से अधिक बाजार तलाशेंगे तो अधिक पाठकों तक पहुंचेंगे। शायद यही कारण है कि सोशल मीडिया पर आज का लेखक अपनी किताब का खुद प्रचार-प्रसार करता हुआ दिख रहा है। हिंदी में ऐसे भी लेखक हैं जो यह काम नहीं करते हैं और यह मानते हैं कि किताब का प्रचार-प्रसार करना प्रकाशक की जिम्मेदारी है ना कि लेखक की। इससे पहले हिंदी के लेखक अपनी किताबों का इस तरह प्रमोशन नहीं करते थे और प्रचार नहीं करते थे। यह सारी जिम्मेदारी पहले प्रकाशक की थी। ऐसे में लेखक प्रकाशक का यह काम क्यों कर रहे हैं? दरअसल बाजार और पूंजी ने सब कुछ उलट-पुलट दिया है। पहले उसने राजनीति को अपने चंगुल में लिया, फिर मीडिया को लिया और अब साहित्य को अपने चंगुल में ले रहा है। पर यह भी सच है कि हिंदी के लेखक भी जनता से कट गए हैं और लेखक संगठन संकीर्ण और कट्टर होने के कारण दूसरी विचारधारा के लेखकों को अपने मंच पर नहीं बुलाते, अपनी पत्रिकाओं में नहीं छापते। इसलिए हिंदी में लेखकों का एक वर्ग इस बात की शिकायत करता रहा है कि आखिर वह किस मंच पर जाए और अपनी बात कहे। लेकिन इस पूरी बहस में एक बात उभर कर आ रही है कि लेखक भी पूंजी के इस खेल में फंस गया है। ऐसे में हिंदी के साहित्यकार क्या करें उनके पास कोई ऐसा बड़ा मंच नहीं है जहां से वे जनता से जुड़ सकें। इस बहस में यह सवाल भी उठ रहा है कि अगर हिंदी के लेखकों को जनता से जुडऩा ही है तो वे किसान आंदोलन में क्यों नहीं जाते?

बंटेंगे तो कटेंगे कोई नारा नहीं, सच्चाई है

ललित गर्ग

निश्चित रूप से बंटेंगे तो कटेंगे कोई नारा नहीं बल्कि सदियों की सच्चाई है। जब-जब हिन्दू कमजोर हुआ है, तब तब उस पर अत्याचार बढ़े हैं, उनका सफाया कर दिया गया है। कश्मीर में हिंदुओं ने ताकत नहीं दिखाई तो उनका नरसंहार हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह एवं महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने हिंदू समुदाय को जाति और विचारधारा के आधार पर विभाजित करने के प्रयासों के खिलाफ लोगों को आगाह करते हुए समाज और लोक कल्याण के लिए 'हिंदू एकता' के महत्व पर भी जोर दिया है। अपने को बचाये रखने एवं दूसरों के मंगल के लिये हिन्दू एकता वर्तमान की बड़ी अपेक्षा है, इसलिये उन्होंने अपना विस्तृत दृष्टिकोण पेश करते हुए न केवल हिन्दू शब्द का विरोध करने वालों पर करारा प्रहार किया है, बल्कि देश में अराजकता का माहौल पैदा करने वाले मुस्लिम संगठनों पर भी सीधी चोट की है। विशेषत: नफरती एवं विघटनकारी सोच के लिये राहुल गांधी पर भी कड़ा प्रहार किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 'बंटोगे तो कटोगे' बयान का समर्थन करते हुए कहा कि वर्तमान हालात में हिन्दू एकता बनाए रखना आवश्यक है, क्योंकि कई जगहों पर धर्मांतरण की घटनाएं हो रही हैं। गणेश पूजा और दुर्गा पूजा के दौरान कुछ स्थानों पर हिन्दुओं पर हमले हुए हैं। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर तरह-तरह के अत्याचार हो रहे हैं। हिन्दुओं पर लगातार हो रहे हमलों एवं उन्हें विभाजित किये जाने की साजिशों को नियंत्रित करने के लिये हिन्दू को संगठित होना ही चाहिए। दत्तात्रेय ने जहां हिन्दुओं को जगाया वहीं राजनीतिक दलों की नींद उड़ा दी, विपक्ष विशेषत: कांग्रेस की हिन्दू विरोधी सोच का पर्दाफाश किया। सरकार्यवाह होसबोले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वार्षिक अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में हिन्दू समाज को जाति, भाषा एवं प्रांत के भेद में बांटने के विपक्षी दलों के प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि हम बंटेंगे तो निश्चित रूप से कटेंगे, इसलिये हिन्दू समाज में एकता आवश्यक है।' उन्होंने इसे जीवन मंत्र जैसा बताया। दिया। उन्होंने देश के सामने कुछ ऐसी बड़ी चुनौतियों को भी रेखांकित किया, जिसे लेकर राजनीतिक दलों एवं साम्प्रदायिक संगठनों की भृकुटि कुछ तन गई है। मथुरा स्थित गऊ ग्राम परखम के दीनदयाल उपाध्याय गौ विज्ञान एवं अनुसंधान केंद्र में आयोजित 25 और 26 अक्टूबर 2024 की

इस बैठक में संघ के सभी 46 प्रांतों के प्रांत एवं सह प्रांत संघचालक, कार्यवाह तथा प्रचारकों ने हिस्सा लिया। योगी आदित्यनाथ ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान एक रैली में हिंदुओं को जातियों में बांटने की विपक्षी दलों की रणनीति के प्रति आगाह करते हुए कहा था कि विपक्ष चाहता है कि मुसलमान एकजुट होकर ताकतवर और हिंदू जातियों में विभाजित होकर कमजोर बने रहें। योगी आदित्यनाथ ने पड़ोसी देश में मुसलमानों के हाथों बेगुनाह हिंदुओं के मारे जाने का हवाला देकर कहा था कि बंटेंगे तो कटेंगे। इस बयान की विपक्ष ने कड़ी आलोचना की, हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने अलग-अलग तरह से इस संदेश को आगे बढ़ाया है। इसी कड़ी में सरकार्यवाह होसबाले हिन्दू एकता एवं संगठन की आवश्यकता व्यक्त की। सरकार्यवाह होसबोले एक सक्रिय, साहसी, चिन्तनशील, राष्ट्रयोद्धा, समाजसुधारक और बदलाव लाने वाले संघ नेता हैं। वे देशहित में अच्छी रचनात्मक एवं सृजनात्मक बातें करते हैं, बदलाव चाहते हैं, राष्ट्र को तोड़ना नहीं जोड़ना चाहते हैं, अच्छी बात यह भी है कि संघ एक जागरूक संगठन है और हर समस्या पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। हर व्यक्ति के दिमाग में एक समस्या है और हर व्यक्ति के दिमाग में एक समाधान है। एक समस्या को सब अपनी समस्या समझे और एक का समाधान सबके काम आए। समाधान के अभाव में बढ़ती हुई समस्या संक्रामक बीमारी का रूप न ले सके, इस दृष्टि से आज का समाधान आज प्रस्तुत करने के लिए आरएसएस निरन्तर जागरूक रहता है। इसीलिये हिन्दू एकता के लिये व्यापक प्रयत्नों की अपेक्षा है। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय के लोगों की परेशानियों को लेकर भारत सरकार ने कदम उठाए हैं। दुनिया में कहीं भी किसी भी हिंदू को अगर कोई परेशानी होती है तो वह मदद के लिए भारत की तरफ ही देखता है। देश एवं दुनिया में हिन्दुओं से जुड़ी परेशानियों एवं समाधान की दृष्टि से एक सशक्त वातावरण बनना अपेक्षित है। होसबाले ने ऐसी ही जटिल होती समस्याओं में लव जिहाद का मुद्दा भी उठाया और कहा कि लव जिहाद से समाज में समस्या हो रही है। उन्होंने कहा, 'लड़कियों को लव जिहाद के प्रति जागरूक करें। हमारे समाज की बहन-बेटियों को बचाना हमारा काम है।' उन्होंने दावा किया कि केरल में 200 लड़कियों को लव जिहाद से बचाया गया है। ध्यान रहे कि अभी राजधानी दिल्ली के नांगलोई इलाके में मुस्लिम लड़के सलीम ने खुद को संजू बताकर हिंदू लड़की सोनिया को प्यार के जाल में फंसाया। सलीम ने सोनिया के साथ शारीरिक संबंध बनाए और उसे गर्भवती कर दिया।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 23 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनिश्री अनुत्तर सागर जी महाराज को मालगांव में तपशिरोमणी उपाधि से अलंकृत किया गया

नांदणी (विश्व परिवार)। आध्यात्म सरोवर के राजहंस, चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के 6 शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज, श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी, श्रमण मुनी श्री प्रणव सागर जी, श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी, श्रमण मुनी श्री संकल्प सागर जी और श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी महाराज जी का उपसंघ मालगाव में विराजमान हैं।

आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर महाराज जी को दिगंबर जैन समाज मालगाव द्वारा 21 नवम्बर को तपशिरोमणी उपाधी से अलंकृत किया गया। उपवास की साधना के लिए मुनिश्री अनुत्तर सागर जी महाराज का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया जा चुका है। चर्याशिरोमणी आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य मुनिश्री अनुत्तर सागर जी महाराज जी की चर्चा आज पूरे विश्व में हो रही है। उपवास की साधना के लिए जैन मुनि का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया जा चुका है। मुनी श्री अनुत्तर सागर महाराज जी को छोटी उम्र में ही वैराग्य हो गया था। उन्होंने 12 साल में अभी तक 1850 उपवास किये हैं। उनके उपवास में खाने की तो बात ही दूर, पूरे 24 घण्टे में एक बूंद पानी भी नहीं लिया जाता। मुनिश्री द्वारा वर्ष 2023 में 256 से अधिक उपवास किया गया है।

मुनि श्री अनुत्तर सागर जी का संक्षिप्त जीवन परिचय- जन्म नाम- जितेंद्र जैन, माता- श्रीमती लक्ष्मी देवी जैन पिता- श्री जमुना प्रसाद जैन जन्म ग्राम- भोपाल (मध्य प्रदेश), जन्म दिनांक- 6 अगस्त 1977 लौकिक शिक्षा- हायर सेकेंडरी दीक्षा पश्चात नाम- मुनि श्री 108 अनुत्तर सागर जी महाराज ब्रह्मचर्य व्रत दिनांक-26/11/2004, ब्रह्मचर्य व्रत गुरु- आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज ब्रह्मचर्य व्रत स्थल-भोपाल (मध्य प्रदेश), मुनि दीक्षा- दिनांक 8 नवंबर 2011, मुनि दीक्षा स्थान- मंगलगिरी जिला सागर (मध्य प्रदेश), मुनि दीक्षा गुरु- आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज।

मुनि श्री अनुत्तर सागर जी 1011 दिन की मौन तपस्या भी कर चुके हैं। तथा 9 राज्यों में 30, 000 कि.मी. की पदयात्रा भी कर चुके हैं। आप प्रथमानुयोग के ज्ञाता है। आपने चारित्रशुद्धि व्रत के 1234 उपवास पूर्ण कर चुके हैं। आपने सहस्त्रनाम के 428 उपवास भी पूर्ण किये हैं। आपने आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज जी के साथ अभी तक 100 से अधिक पंचकल्याणकों में अपना सानिध्य प्रदान किया है। इस पंचम काल में चतुर्थ काल जैसी साधना में लीन दिगंबर जैन मुनी श्री अनुत्तर सागर जी हैं। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-अभिषेक अशोक पाटील

माँ जीवन में एक बार सत्यार्थ बोध और वस्तुत्व महाकाव्य ग्रंथ को पढना : मुनि श्री सर्वार्थसागर जी महाराज

नांदणी (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। विचित्र बाते प्रणेता श्रमण मुनी श्री सर्वार्थसागर जी महाराज बताते है कि हमारे गुरू आचार्य भगवन विशुद्धसागर जी महाराज अध्यात्म-विद्या प्रवीण, न्याय दर्शन, सिद्धांत-नीती, व्याकरणादि विद्याओं के ज्ञाता, स्याद्वाद अनेकांत के सजग प्रहरी वैराग्य से ओत प्रोत, मृदू-मधुर स्वभावी, भद्र परिणामी, जिनागम के गूढ ज्ञाता, अध्ययन अध्यापन में कुशल, संघ वृद्धी में धुरंधर अग्रेसर, रत्नत्रय से मंडीत, नय के महापंडित, समंतभद्र जी सम रसपूर्ण लयबद्ध आध्यात्मिक प्रवचनों के सफल प्रस्तोता, आचार्य भगवन कुंदकुंद सम निडर, निशंक, निष्पक्ष लेखक है।

माँ जीवन में एक बार सत्यार्थ बोध और वस्तुत्व महाकाव्य ग्रंथ को जरूर पढना। आचार्य भगवन विशुद्धसागर जी महाराज ने लिखा है कि कोई मानव जब भी महानता, पूज्यता को प्राप्त होता है उनके संस्कार ही उसे उंचाई यों पर पहूँचाते है। संस्कारों कि महत्ता समझाते हुए सत्यार्थ बोध में आचार्य भगवन विशुद्धसागर महाराज जी ने अहिंसा, सत्यता, अचौर्य, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह, मैत्री, प्रमोद, माध्यस्तभाव, विवेक, धैर्य, दया, त्याग, समाधी, गुरू, शिष्य, संस्कार, सहज जीवन, पुण्य-पाप, आत्मा, कर्म, अप्रमाद, सही सोच जैसे अनेक विषय में आचार्य भगवन ने लिखा है आप जरूर पढ़े। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

गोकुल नगर दिगम्बर जैन मंदिर इन्दौर के पंचकल्याणक महामहोत्सव के लिए भूमि शुद्धि कर तैयारियां प्रारंभ

इंदोर (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज मुनि श्री संधान सागर महाराज स संघ सानिध्य में आगामी 2 दिसंबर से 7 दिसंबर 2024 तक आयोजित पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए वैभव नगर दिगम्बर जैन मंदिर इन्दौर के सामने 'नमो खेल परिसर' में मुनि श्री के आशीर्वाद से बाल ब्र. अभय भैया एवं अमित बास्तु के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ भूमि शुद्धि की गयी उपरोक्त जानकारी देते हुये धर्म प्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन ने वताया कार्यक्रम में नगर निगम के पार्षद राजीव जैन, जैनेश झांझरी, विनोद जैन, श्रीपाल जैन, रविन्द्र जैन, नीलेश जैन, नमिश जैन, मनीष जैन उपस्थित थे। आगामी 24 नवम्बर रविवार को मोहताभवन में प्रात: 8 बजे से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के महापात्रों का चयन एवं 108 रथयात्रा में शामिल झांकिओं तथा महिलामंडलों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान मुनिसंघ के सानिध्य में किया जाऐगा धर्म प्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक डोसी, महोत्सव अध्यक्ष नवीन आनंद गोधा महामंत्री हर्ष जैन प्रवक्ता अविनाश जैन मीडिया प्रभारी राहुल जैन सहित समस्त पदाधिकारिओं ने सभी से निवेदन किया है कि समय पर पधार कर धर्म लाभ लें। **-अविनाश जैन**

सहनशीलता मानव का अद्भुत गुण : आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

गुन्सी (विश्व परिवार)। प. पू. भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ससंघ का निर्विघ्न चातुर्मास श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान में संपन्न हुआ। चातुर्मास में धर्म की महती प्रभावना हुई। दूर-दूर से यात्रीगण दर्शनार्थ पहुंचकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे हैं। क्षेत्र पर भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। मुंबई से आये दर्शनार्थी परिवार संतोष रतनलाल शाह ने गुरु मां का आशीर्वाद प्राप्त किया।

पूज्य माताजी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि - जीवन में सहनशील बनना बहुत आवश्यक है क्योंकि आज दुनिया में सभी इतने कमजोर हो गये कि किसी पर भी विपत्ति आई वह आत्मघात करने को तत्पर हो उठता है। सहनशीलता का गुण इंसान को सुख शांति व उन्नति देता है, असहनशीलता का गुण इंसान को पश्चाताप, दु:ख, संताप और जीवन में असफलता देता है। पूज्य माताजी ससंघ की निर्विघ्न आहारचर्या कराने का सौभाग्य मालवीय नगर जयपुर समाज ने प्राप्त किया। आहारचर्या कराने का आनन्द सभी के चेहरे पर झलक रहा था सभी अपने को धन्य मान रहे थे।

संक्षिप्त समाचार

'ज्ञान स्मृति धरोहर' का हुआ भव्य विमोचन

ललितपुर (विश्व परिवार)। छाणी परंपरा के सप्तम पट्टाचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज ससंघ, गणिनी आर्यिका श्री आर्षमती माता जी ससंघ, ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में विगत दिनों आचार्य श्री ज्ञानसागर आरोग्य धाम, डूंडाहेड़ा, मंडोला जिला बागपत में ज्ञान स्मृति धरोहर का भव्य विमोचन किया गया। पुस्तक का कुशल संपादन डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने किया है।ब्र0 अनीता दीदी ने पुस्तक का परिचय देते हुए कहा कि इस स्मारिका में 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023 तक ज्ञानतीर्थ मुरैना में सम्पन्न हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृतियों एवं सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की स्मृतियों को सहेजा किया गया है। पुस्तक का विमोचन शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जयकुमार निशान्त जी, प्रो. नलिन के शास्त्री, ब्र. मनीष भैया, ब्र. अनीता दीदी, ब्र. मंजुला दीदी, काउंसलर रितेश जैन, ज्ञानसागर आरोग्य धाम के पदाधिकारियों आदि ने किया।इस मौके पर संपादक डॉ0 सुनील जैन संचय का सम्मान किया गया। विमोचन के बाद अचार्यश्री एवं मंचासीन सभी संघ को कृति भेंट की गई। इसके बाद उपस्थित सभी लोगों को पुस्तक भेंट की गई। **-पुष्पेंद्र जैन**

व्यंतर देवों का उपसर्ग हमारे कर्मों अनुसार होता हैं पूजन में अर्जित पुण्य से हमारे कष्ट दूर होते हैं: आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

पारसोला (विश्व परिवार)। पंचम पट्टाघीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज सन्मति भवन में संघ सहित विराजित है आचार्य श्री संघ सानिध्य में स्थानीय श्यामा वाटिका में सर्वतोभद्र विधान की महामंडल की पूजन चल रही है नंदीश्वर जिनालयों की पूजन पूर्ण हो चुकी है।आज कुंडल गिरी, रुचक गिरी व्यंतर, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस भूत, पिशाच ज्योतिषक देवों के भवनों में स्थित जिनालयों की पूजन चल रही है। जयंतीलाल कोठारी अध्यक्ष जैन समाज, ऋषभ पचौरी अध्यक्ष वर्षायोग समिति राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने विधान में प्रवचन में बताया कि जिनवाणी से हमें ज्ञान मिलता हैं ज्ञानमति माताजी द्वारा रचित इस विधान में जिनागम भरा हुआ है। अकृत्रिम जिनालयों स्वयं सिद्ध शास्वत है। पूजन मन लगाकर करना चाहिए।अभिषेक के बिना पूजन अधूरा हैं।पूजन से कर्म और कष्ट दूर होता है। सुभौम चक्रवर्ती और रसोईया का प्रसंग से बताया कि व्यंतर देवों का प्रकोप हमारे कर्मों पर निर्भर है इसलिए किसी से बैर नहीं करना चाहिए कषाय नहीं करना चाहिए। पूजन में जो द्रव्य लिखे गए हैं वही चढ़ाना चाहिए।

तेलंगाना से लाया जा रहा 470 क्विंटल अवैध धान जब्त

रायपुर (विश्व परिवार)। राजनांदगांव जिले की अंतर्राज्जीय जांच चौकी पाटेकोहरा में 470 क्विंटल धान जब्त किया गया। यह धान अवैध रूप से परिवहन कर तेलंगाना राज्य से छत्तीसगढ़ लाया जा रहा था। पाटेकोहरा जांच चौकी में खाद्य एवं मंडी विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीम ने दो ट्रकों में 470 क्विंटल धान पाए जाने पर जब इसकी जांच पड़ताल की तो पता चला कि यह धान अवैध रूप से परिवहन कर तेलंगाना से लाया जा रहा है। खाद्य अधिकारी श्री रविन्द्र सोनी ने बताया कि टीम ने दोनों ट्रकों में लोड धान को जब्त कर पुलिस चौकी चिचोला की सुपुर्दगी में दे दिया है। उन्होंने बताया कि अवैध रूप से परिवहन कर धान को सरायपाली और रायपुर ले जाया जा रहा था।

पूजन अभिषेक से बढ़ता है आत्मविश्वास, अशुद्धि के अवयव दूर करने की विधि है तप साधना : मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज

गौरेला (विश्व परिवार)। अशुद्धि के अवयव दूर कर आत्मा को शुद्ध करने की विधि संयम साधना है। हमारे अतीत संस्कारों से समृद्ध था तब ही भारत संसार का सिरमौर था। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनि श्री पूज्य सागर महाराज ने श्रावकों को संस्कार का महत्व बताते हुए कहा कि पूजन अभिषेक से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है।

मुनि श्री पूज्य सागर महाराज ने बताया कि टनोंटन पानी की मात्रा में अल्प मात्रा का घी सतह के ऊपर आकर विराजमान हो जाता है।पानी की भारी मात्रा घी की बूंदों को डुबा नहीं सकती क्योंकि घी शुद्ध अवस्था है। आग में तपकर घी बनता है। ऐसे ही अशुद्धि के अवयवों से रहित शुद्ध आत्मा संसार के ऊपर विराजमान हो जाती है।

अमरकंटक के अरण्य में भव्यातिभव्य जिन मंदिर का निर्माण और आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का हम पर महान उपकार है।संयम पथ पर चलते हुये उन्होंने अपनी आत्मशुद्धि की किंतु साथ अमरकंटक के समीपवर्तियों के कल्याण भी किया। बार बार पग विहार कर अपने बाधाओं को पार कर आचार्य महाराज अमरकंटक आते रहे और हमारे कल्याण की भावना भाते रहे।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का इतना सानिध्य पाकर भी आप नहीं सुधरे तो आप किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। पूर्वजों के संस्कार सुरक्षित रखना और आने वाली पीढ़ी को सौंपना आपका कर्तव्य है। पूजन अभिषेक गृहस्थ के लिये अनिवार्य है, इसके माध्यम से आप अपने पापों को गला सकते हैं।

इसके पूर्व अमरकंटक खोडरी होते हुए दिगंबर जैन मुनि द्वय श्री पूज्य सागर महाराज व श्री अतुल सागर महाराज के के गौरेला नगर आगमन पर जैन समाज सहित अन्य नगरवासियों ने भव्य अगवानी की। महाराज जी के उद्बोधन से प्रेरणा पाकर स्वप्निल जैन परिवार ने एक लाख एक हजार रुपए की दानराशि के माध्यम से शांतिधारा के प्रथम कलश व अनिल जैन के परिवार ने इक्यासी हजार रुपए की दानराशि से द्वितीय कलश से भगवान आदिनाथ की प्रतिमा पर शांतिधारा अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

कारागृह में बंदियों को संबोधन : भारत की मिट्टी में जन्मे सब भारत की संतान, हमारी एक जाति मानव और एक धर्म मानवता : पूज्य मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज

गौरेला (विश्व परिवार)। भारत की मिट्टी में जन्मे सब भारत की संतान हैं। भारत भूमि सबकी जननी है और एक जननी से जन्म लेने वाले भाई होते हैं।हमारी एक जाति है मानव और हमारा एक धर्म है मानवता, भारत के सभी संप्रदायों में परस्पर के भ्रातृत्व के भाव हों क्योंकि कुछ और होने के पहले हम भाई हैं। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य पूज्य मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज ने जिला जेल के बंदियों को संबोधित करते हुए कहा कि जेल परिसर को कारावास नहीं आश्रम समझकर अपने आचरण में परिवर्तन लायें।

पूज्य मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज ने संगत कुसंगत, परिस्थितियों के वशीभूत अथवा आवेश, लोभ लालच में घिरकर अपराध हो गया और प्रत्येक अपराधी को अवांछनीय कृत्य के पश्चात उसे पश्चाताप होता है। उससे अपना घर परिवार संबंधी संपत्ति सब छूट जाते हैं और कारागृह की दीवारों के अंदर संसार सीमित हो जाता है। महाराज जी ने बताया ये सब तो हमने भी छोड़ा मगर हमने इन्हें स्वेच्छा से त्यागा है और वीतरागता को आत्मसात किया।अंतर ये है कि आप दुष्कृत्य कर छोड़ने पर विवश हुए और हमने त्याग कर दोष रहित आचरण को अंगीकार किया।हम संत बने और आप बंदी।

कारागृह में न तो मांस भक्षण कर सकते न मदिरा पान, न दुराचरण न मनोरंजन मोबाइल का उपभोग, बिल्कुल संत सा जीवन हो जाता है।विवशता में हुये इस सुधार को बाहर आकर भी ऐसा ही जीवन जियें तो आप अनेक पापों से मुक्त हो सकते हैं। बंदियों ने महाराज जी के प्रवचनों से प्रभावित होकर मांस मदिरा, धूम्रपान को त्यागकर सही मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। महाराज जी ने कहा कि परस्पर भाई की भांति रहें और जेल प्रभारी अन्य प्रहरियों के प्रति आदर का भाव रखें क्योंकि जब तक तुम यहां हो तुम्हारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति ये ही करते हैं।

इस अवसर पर श्री वेदचन्द जैन ने कहा कि संसार के सभी आलंबनों को त्यागकर जैन मुनि समतापूर्वक साधना करते हैं।इनका जीवन दोषरहित है और स्वकल्याण के साथ जगकल्याण की भावना भाते हैं।ऐसे परोपकारी संतों का सानिध्य पाना परम् सौभाग्य है। कारागृह की भूमि और बंदियों के लिये ये गौरव के क्षण हैं जब दिगंबर जैन मुनि स्वयं चलकर इस प्रांगण में आये हैं। कारागृह प्रभारी सेवक कुमार ने मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज और मुनि श्री अतुल सागर जी महाराज के आगमन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इनसे बढ़कर कोई त्यागी नहीं है। हमारा सौभाग्य है कि ऐसे संत बंदियों के कल्याण के लिये यहां पधारे। संदीप सिंघई ने जिला प्रशासन पुलिस प्रशासन, जेल प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया। **-वेदचन्द जैन**

पारस जैन पार्श्वमणि और श्रीमती सारिका जैन का भावपूर्ण अभिनंदन

पिताजी की सेवा और समर्पण के प्रति निष्ठा के लिए विशेष भावभीना सम्मान

कोटा (विश्व परिवार)। मां चर्मण्यवती के पावन तट पर स्थित आर.के. पुरम के देव शास्त्र गुरु के परम भक्त, व्यवहार कुशल श्री विमल चंद जैन 16 अगस्त 2022 को ब्रेन पैरालिसिस बीमारी से ग्रसित हो गए थे। विगत 2 साल 6 महीने तक उनकी दिन-रात पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से सेवा करने के उपलक्ष्य में, कोटा सकल जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष, समाजसेवी एवं ऊर्जावान धर्मनिष्ठ श्री अजय जैन बाकलीवाल और पारस जैन (पत्रिका) एवं श्रीमती मृदुला जैन ने पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार और सद संस्कारो से युक्त श्रीमती सारिका जैन का भावपूर्ण अभिनंदन कर उन्हें माल्यार्पण किया।

अजय बाकलीवाल जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज के समय में ऐसे संदेश तेजी से वायरल होते हैं, जिनमें यह दिखाया जाता है कि कुछ लोग अपने माता-पिता की सेवा नहीं करते। ऐसे माहौल में पारस जैन पार्श्वमणि और श्रीमती सारिका जैन ने समाज को यह सकारात्मक संदेश दिया है कि आज भी ऐसे लोग हैं, जो अपने माता-पिता की सेवा को प्राथमिकता देते हैं। श्री विमल चंद जैन के अंतिम समय में जिस प्रकार उनके बेटे और बहू ने निष्ठा और समर्पण से उनकी सेवा की, उसका प्रचार होना चाहिए ताकि यह सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके। अगर माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करने वाले बेटा-बहू का समाज में वास्तविक सम्मान होने लगेगा, तो नई पीढ़ी में माता-पिता के प्रति आदर और सम्मान का भाव बढ़ेगा। साथ ही, ओल्ड एज होम जैसी अवधारणाओं को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा, क्योंकि युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों की देखभाल को अपना कर्तव्य समझेगी।

त्रिकाल चौबीस जिनालय तीर्थ वनकर सामने आया : मुनि श्री अरह सागर जी महाराज

जगत कल्याण की कामना के लिए हुई मुनिश्री ने कराई महाशान्ति

गजरथ महोत्सव की वर्ष गांठ पर होगी वृषभ रथ यात्रा : राकेश कासल

अशोक नगर (विश्व परिवार)। श्री शान्ति नाथ त्रिकाल चौबीस जिनालय की वर्षगांठ का निवेदन लेकर पंचायत कमेटी आई है त्रिकाल चौबीस जिनालय शान्ति नगर की ख्याति बहुत फैलीं है मुनि पुंगव श्रीसुधासागर जी महाराज ने वर्षो पहले इस नगर में त्रिकाल चौबीस दी इस भूमि के दर्शन करने की भावना हम साधु संत भी रखते हैं आज कमेटी हमें बांध रही है तो आप भी धर्म की डोर से बंधकर धर्म लाभ ले धर्म लाभ देना ही तो हमारा उद्देश्य है उक्त आश्य केउद्गार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनिश्री अरह सागर जी महाराज ने व्यक्त किए।

जगत कल्याण की कामना करते हुए मुनि श्री ने कराई महाशान्ति धारा : इसके पहले आज मुनिश्री अरह सागर जी महाराज के सान्निध्य में जगत कल्याण की कामना करते हुए महा शान्ति धारा का आयोजन किया गया प्रारंभ में जैन समाज के मंत्री शैलेन्द्र श्रागर के मंत्रोच्चार के साथ प्रभु को पाडूकशिला पर विराजमान किया गया जहां मंत्रोच्चार के वीच भगवान के कलशाभिषेक किया गया इस के बाद एक वर्ष उपरांत मुनि श्री अरहसागर जी महाराज के श्री मुख से जगत कल्याण की कामना करते हुए महा शान्ति धारा की गई जिसका सौभाग्य जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा परिवार ओम प्रकाश देवेन्द्र कुमार पवन कुमार धुर्रा नन्नू लाल राजेन्द्र कुमार महावीर किराना परिवार के साथ अन्य भक्तों को मिला इस दौरान प्रभु चरणों में अर्घो का समर्पण किया गया।

हम सब रथयात्रा महोत्सव का आशीर्वाद लेने आयें है- विजय धुर्रा : इसके पहले मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि आज हम सब जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद के नेतृत्व में दो दिसंबर को होने वाले रथयात्रा महोत्सव हेतु परम पूज्य मुनि श्री अरह सागर जी महाराज को श्री फल भेंट कर रहे हैं श्री फल भेंट करते हुए महामंत्री राकेश अमरोद ने कहा कि दो दिसंबर को नगर में भव्य वृषभ रथ यात्रा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है इसमें आपका सान्निध्य समाज को मिले ऐसी भावना है

अशोक नगर को मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने तीर्थ का दर्जा दिलाया -राकेश कांसल : जैन समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल ने कहा कि सन् उन्नीस सौ वानवे में हुए ऐतिहासिक त्रिकाल चौबीस जिनालय पंचकल्याणक एवं विश्व इतिहास में पहली बार आयोजित हुई सप्त गजरथमहोत्सव के कारण अशोक नगर को तीर्थ का दर्जा मिला ये दर्जा मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने वर्षो पूर्व हमारे नगर को दिलाया था आज भी देश भर से यहां यात्रियों का आवागमन लगा रहता है ऐसे शान्ति नगर की वर्ष गांठ में हम आपके सानिध्य में मनाने जा रहे हैं इस हेतु आपका आशीर्वाद मिले

जन्म सभी को अच्छा लगता है मरण से सभी वचना चहेते हैं : इस दौरान मुनिश्री ने कहा कि जन्म सबको अच्छा लगता है मरण किसी को भी अच्छी नहीं लगती सब ज़ीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता इस नाशवान शरीर को हम क्या वचा सकते हैं मृत्यु के भय से तो बचा जा सकता है मृत्यु से बचना बहुत मुश्किल ही नहीं है असंभव है मृत्यु तो निश्चित है जिस दिन आपका मजबूत मकान में शात्रू भले प्रवेश ना कर पाए लेकिन मृत्यु तो प्रवेश कर ही जाती है तनपर जो आपने सुंदर जोड़ा पपहन रखा है वह भी तुम्हारे साथ जाने वाला नहीं है फिर हम किसके लिए जोड़ रहे हैं उन्होंने कहा कि दुर रहने वाला सुख तुम्हें पास लगता है और पास रहने वाला दु:ख को तुम छोड़ना चाहते हो सचमुच यदि तुम दु:ख से बचना चाहते हो तो उन बाधक करणों को हटा दो जिनके कारण दु:ख आता है तो सुख अपने आप आने लगेगा। **-विजय धुर्रा**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 23 नवंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने किया छात्रावास का औचक निरीक्षण

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने जिला मुख्यालय के दर्रापारा स्थित प्रयास आवासीय छात्रावास का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से अध्ययन, भोजन और मिलने वाली अन्य सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने किचन, स्टोर रूम, शौचालय और शयन कक्ष मे जाकर साफ सफाई और अन्य सुविधा का अवलोकन किया। इस दौरान एसडीएम श्री राकेश गोलछा, नायब तहसीलदार सुश्री अवंतिका गुप्ता मौजूद रहे। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने प्रयास आवासीय छात्रावास दर्रापारा का औचक निरीक्षण किया। कलेक्टर ने निरीक्षण के दौरान किचन, शौचालय, बच्चों के शयन कक्ष का भी निरीक्षण किया। उन्होंने परिसर की साफसफाई रखने की निर्देश दिये हैं। श्री अग्रवाल ने यहां स्टाक पंजी, आगंतुक पंजी और पालक पंजी का भी अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि छात्रावास में बिना लिखित अनुमति के कोई भी मिलने ना आये। उन्होंने कहा कि बच्चों को समय पर भोजन मिलना सुनिश्चित हो और समय-समय पर स्वास्थ्य चेकअप किया जाए। कलेक्टर ने विभाग को यहां अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में भी निरंतर सजग रहने निर्देश दिये।

अवैध रूप से दुकानों में पेट्रोल भडारण

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। खाद्य विभाग से प्राप्त जानकारी अनुसार आज विकासखण्ड दन्तेवाड़ा के विभिन्न संस्थानों में खाद्य निरीक्षक प्रमोद कुमार सोनवानी, खाद्य निरीक्षक धीरेन्द्र कश्यप तथा खाद्य निरीक्षक श्रीमती प्रीति ठाकुर के द्वारा आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय के मेसर्स दशमती किराना स्टोर्स में 3 ली. पेट्रोल, मेसर्स जीतू किराना स्टोर्स में 1.5 ली. पेट्रोल, मेसर्स श्री ओम साई सैलून में 3 ली. पेट्रोल, मेसर्स देवांगन किराना स्टोर्स में 4.5 ली. पेट्रोल, मेसर्स जमुना फ्रूट एण्ड डेली निड्स में 6 ली. पेट्रोल तथा मेसर्स सीताराम पान पैलेस में 6 ली. पेट्रोल, अवैध रूप से विक्रय के उद्देश्य से रखा पाया गया। इस संबंध में अवैध रूप से ज्वलनशील पदार्थ (पेट्रोल) भंडारित होने व छ.ग. एम. एस. एच. एस. डी. (अनुज्ञापन तथा नियंत्रण) आदेश 1980 का उल्लंघन पाये जाने पर भंडारित ज्वलनशील पदार्थ (पेट्रोल) को जप्त कर लिया गया। इसके अलावा इन दुकानों में अग्नि दुर्घटना से बचाव हेतु कोई सुरक्षा उपाय नहीं था। जिसके लिए आगे की कार्यवाही हेतु प्रकरण को कलेक्टर (खाद्य शाखा) में प्रस्तुत किया गया है।

सुदूर इलाकों में बिछा सड़कों का संजाल

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। गांव हो या शहर, विकास के पैमाने में सड़क, रोड, पुल-पुलिया,जैसे अधोसंरचनाएं को देख कर ही तय किया जाता है। वर्तमान में राज्य शासन द्वारा इन सभी क्षेत्रों के बुनियादी ढांचे की मजबूती पर विशेष जोर दिया जा रहा है जहां इसकी तुरन्त जरूरत हो। दंतेवाड़ा जिले में भी कई ऐसे गांव थे जो अब तक पक्की सड़कों से महरूम रहे है। केवल कच्चे पहुंच मार्ग एवं पगडंडियां से ही ऐसे ग्रामों तक पहुंचा जा सकता था। जाहिर तौर पर ऐसे अलग-थलग ग्रामों में बसे ग्रामीणों की दैनिन्दिनी कठिनाइयों से भरी तो होगी ही फिर चाहे वह हाट बाजार आना-जाना हो या फिर बच्चों को स्कूल पैदल चल कर आना। मुख्य मार्ग तक पहुंचने के लिए पैदल चलने के सिवा कोई चारा ही नहीं था। जिले में ऐसे संवेदनशील ग्रामों में कुपेर, झिरका,कोरीरास, किडरीरास, मोलसनार, उदेला, परचेली, मारजूम, जैसे गांव पहुंच मार्ग विहीन गांव सूची में शामिल थे। वर्तमान में इन गांवों को मुख्य मार्गो से जोड़ा गया है। जिससे यहां के रहवासियों के जीवन की कठिनाइयां कम हुई है। छत्तीसगढ़ ग्रामीण सड़क विकास अभिकरण के माध्यम से वर्तमान में पीएमजीएसवाई योजना अंतर्गत माह अप्रैल 2024 से अक्टूबर 2024 तक पीएमजीएसवाय-1 के तीन सड़के जिसकी लम्बाई 13.95 एवं रिनीवल संधारण की एक सड़क जिसकी लंबाई 9 किलोमीटर है पूर्ण कर ली गई है। इससे कुल मिलाकर उपरोक्त सभी बसाहटें लाभान्वित हो रही है। इसके तहत कुपेर से झिरका पैकेज क्र. सीजी 03-152, कोरीरास, किडरीरास कि.मी-2 से छोटे बेड़मा पैकेज क्र. सीजी 03-156, मोलसनार से उदेला पैकेज क्र. सीजी 03-206 परचेली से मारजूम पैकेज क्र. सीजी-03 एम11 है। अगर सड़क निर्माण की पूर्व की समस्या का ज़िक करें तो इस क्षेत्र में कामगारो का अभाव था जिससे सड़क निर्माण में दिक्कत आई इसके अलावा संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण इन बसाहटों में पहुंच पाना आसान भी नहीं था। फिर भी प्रशासन के सहयोग, विभागीय अधिकारी कर्मचारी के प्रयासों एवं एजेंसी एवं ग्रामीणों के सहयोग से यह सभी कार्य सफ्लतापूर्वक सम्पादित हो पाए। बहरहाल सड़क निर्माण कार्य से ग्रामीणों को मुख्य मार्गों से जुड़ाव के साथ-साथ स्कूल, स्वास्थ्य, एवं हाट बाजार जैसी बुनियादी सुविधाएं प्राप्त करने में आसानी हुई कुल मिलाकर आवागमन सुचारू एवं बारहमासी होने से ग्रामीणों में हर्षित और उत्साहित हैं। यह कहना जरूरी होगा कि स्थानीय ग्रामीणों के लिए पक्की सड़के बनाकर यहां तरक्की के रास्तों को सुनिश्चित किया गया है।

जनजातीय कल्याण पर आधारित योजनाओं की समीक्षा करने राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह ने ली बैठक

केन्द्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन की एजेण्डावार जानकारी ली

कांकेर(विश्व परिवार)। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग नई दिल्ली के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य (केन्द्रीय मंत्री दर्जा प्राप्त) की अध्यक्षता में जिले में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण एवं विकास के लिए क्रियान्वित योजनाओं की समीक्षा करने जिला स्तर के अधिकारियां की बैठक ली गई, जिसमें जिले में अनुसूचित जनजाति वर्ग के हितग्राहियों एवं लोगों तक योजनाओं की पहुंच की जानकारी ली। उन्होंने एजेण्डावार एवं योजनावार विभागीय अधिकारियों से जानकारी लेकर समीक्षा की। जिला पंचायत के सभाकक्ष में बुधवार 20 नवम्बर की शाम को आयोजित बैठक में राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष श्री आर्य ने कहा कि अनुसूचित जनजाति से संबंधित अथवा उनको प्रभावित करने वाली सभी नीतियों के संबंध में आयोग समीक्षा करता है तथा जनजातीय कल्याण के सभी पहलुओं का परीक्षण करता है। उन्होंने कांकेर जिले में निवासरत अनुसूचित जनजातियों के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत करते हुए केन्द्र शासन की हितग्राहीमूलक महत्वांकांक्षी योजनाओं का क्रियान्वयन गंभीरता एवं सतर्कता के साथ करने के निर्देश सभी अधिकारियों को दिए। इस अवसर पर आयोग के उपनिदेशक श्री राकेश कुमार दुबे ने एजेण्डावार योजनाओं की प्रगति की जानकारी विभागवार ली। इस दौरान कलेक्टर ने अनुसूचित जनजाति के कल्याण के लिए जिले में संचालित योजनाओं की विभागवार संख्यात्मक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जिले में मछली उत्पादन, ऑयल पॉम सहित विभिन्न गतिविधियों में विकास की काफी संभावनाएं हैं तथा इस दिशा में जिला प्रशासन लगातार सार्थक एवं सतत प्रयास कर रहा है। कलेक्टर ने विकास की गति में तेजी लाने केन्द्र से अतिरिक्त आबंटन प्रदाय करने की अनुशंसा करने का आग्रह आयोग के अध्यक्ष से किया। समीक्षा बैठक में स्कूल शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, आदिवासी विकास, वन, रोजगार, कृषि, अंत्यावसायी, समाज कल्याण, स्वास्थ्य, राजस्व सहित विभिन्न विभागों में संचालित अनुसूचित जनजातीय कल्याण से संबंधित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई।

प्रधानमंत्री आवास योजना, जल शक्ति अभियान, स्वच्छ भारत मिशन एनआरएलएम सहित अन्य योजनाओं की सीईओ ने किया समीक्षा

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जिला पंचायत के भूतल सभाकक्ष में आज जिला पंचायत सीईओ श्री जयंत नाहटा द्वारा सीईओ जनपद पंचायत, पीओ नरेगा, बीपीएम, बीसी आवास, तकनीकी सहायक एवं सचिवों की उपस्थिति में विभागीय योजनाओं की समीक्षा किया गया। बैठक में सर्वप्रथम सीईओ ने प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत नॉमिनी वाले समस्याओं का 01 सप्ताह के भीतर निराकरण करने के निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसे आवास मित्र जो कार्य करने में रुचि नहीं ले रहे हैं, उनके विरूद्ध आवश्यक कार्यवाही करते हुए प्रस्ताव जिला पंचायत को उपलब्ध करावें। इसी प्रकार उन्होंने आवास योजना के तहत वर्ष 2024 25 हेतु लक्ष्य के अनुसार जितने हितग्राहियों का पंजीयन हुआ है उतने ही हितग्राहियों का स्वीकृति करने का भी निर्देश दिया। इसी प्रकार हितग्राहियों का पंजीयन एवं आवास स्वीकृति में अंतर को कम करने, वर्ष 2016 से 23 तक के ऐसे अपूर्ण आवास जो प्लिंथ स्तर तक पूर्ण है ऐसे लगभग 238 आवास को टिन शेड 07 दिवस के भीतर लगाने हेतु उन्होंने कहा। इस क्रम में उन्होने मनरेगा के तहत जल शक्ति अभियान अंतर्गत जल संरचनाओं का सर्वे कार्य 30 नवंबर तक 100 प्रतिशत पूर्ण करने तथा संरचनाओं का प्राक्कलन 7 दिसंबर तक जिला पंचायत को प्रेरित करने एवं जिला स्तर से 15 दिसंबर 2024 तक सभी कार्यों को स्वीकृत करने, डबरी के कार्य को निरस्त करने हेतु प्रस्ताव प्राक्कलन, नक्शा खसरा, पंचायत प्रस्ताव सहित 04 दिन में भेजने, मनरेगा के कार्यों में डिमांड अनुसार मास्टर जनरेट करने, कार्यों के अनुसार 01 सप्ताह में मानव दिवस बढ़ाने, के लिए भी समस्त सीईओ जनपद पंचायत को निर्देशित किया। सीईओ ने यह भी कहा कि एनएमएमएस मेंष्पून्य एंट्री करने वाले तकनीकी सहायक एक सप्ताह के भीतर प्रगति लाए अन्यथा उनके विरूद्ध वेतन कटौती की कार्यवाही की जावेगी। इसके साथ ही स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा करते हुए उनके द्वारा सेग्रीगेशन शेड-02 डुमाम एवं झिरका पंचायत में स्वीकृत की कार्यवाही करने, 10 प्रगतिरत कार्यों को पूर्ण करने, फीकल सेल हेतु कोड़ेनार एवं कारली में जगह का चिन्हांकन कर नक्शा खसरा 1 सप्ताह के भीतर उपलब्ध कराने, एवं 13 अप्रारंभ सामुदायिक शौचालय को अविलंब प्रारंभ करने हेतु कहा गया। समीक्षा के दौरान एनआरएलएम में परिवार समावेशन की प्रगति कटेकल्याण एवं कुआकोंडा ब्लॉक में कम पाई गई। इस संबंध में सीइओ ने कार्ययोजना बनाकर प्रगति लाने हेतु निर्देशित किया। साथ ही उन्होंने पूर्व से गठित समूह में परिवारों की संख्या में बढ़ोतरी करने, लखपति दीदी के संबंध में 05 ऐसे समूह, जो अन्य गतिविधियां करने हेतु इच्छुक हैं उनके लिए पृथक से कार्ययोजना बनाने के लिए भी संबंधितों को निर्देश दिया।

कलेक्टर ने की जिले में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन की समीक्षा

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने धान उपार्जन कार्य में संलग्न सभी विभाग खाद्य, सहकारिता, जिला सहकारी बैंक, विपणन एवं नागरिक आपूर्ति निगम की समीक्षा बैठक में जिले के पंजीकृत कृषकों से शासन के निर्देशानुसार प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से औसत अच्छी किस्म के धान लेने व किसानों को उपार्जन केन्द्र में टोकन प्राप्त करने से उपार्जन केन्द्र में धान विक्रय तक हर सम्भव सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिससे किसानों को धान विक्रय में किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। शासन के निर्देशानुसार नये पुराने बारदाने में 50:50 के अनुपात में खरीदने, बारदानों में अनिवार्य रूप से उपार्जन केन्द्रों का मार्का लगाने और खरीदे गये धान की स्टेकिंग निर्धारित मापदण्ड के अनुरूप किये जाने कहा गया। साथ ही कोचियों व्यापारियों पर नजर रखने एवं अवैध धान विक्रय के लिए लाए जाने पर एसडीएम, तहसीलदार एवं खाद्य विभाग को सूचना देने एवं नियमानुसार कार्यवाही के निर्देश दिए गए। उल्लेखनीय है कि जिले में इस वर्ष 55, 298 किसानों के द्वारा धान विक्रय हेतु पंजीयन कराया गया है, जिसमें गतवर्ष की तुलना में 3266 नवीन कृषकों के द्वारा पंजीयन कराया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के राज्य सलाहकार ने किया जिले के ग्राम पंचायतों का औचक निरीक्षण

बालोद(विश्व परिवार)। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के राज्य सलाहकार श्रीमती अभिलाषा आनंद ने आज जिले के विभिन्न ग्राम पंचायतों का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने गुरूर विकासखण्ड के ग्राम तारीं में संचालित प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट, यूनिट एवं कचरा संग्रहण शेड का निरिक्षण किया एवं वहाँ उपस्थित स्वच्छता दीदीयों से चर्चा की। इस दौरान श्रीमती आनंद ने बालोद विकासखण्ड के ग्राम पंचायत सांकरा क., सिवनी एवं जमरूवा में सामुदायिक शौचालय, फिकल स्लज ट्रीटमेंन्ट प्लांट एवं स्वच्छता के अन्य गतिविधियों का निरिक्षण किया। इस अवसर पर श्रीमती आनंद ने स्वच्छाग्राही दीदीयों से चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वच्छता पर्यावरण के सुरक्षा हेतु अत्यंत आवश्यक है एवं स्वच्छता के बिना स्वस्थ्य समाज की कल्पना नही की जा सकती। इस दौरान उन्होंने जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे से 'हमारा शौचालय हमारा सम्मान' अभियान के संबंध में चर्चा की। डॉ. कन्नौजे ने श्रीमती आनंद को निर्मित स्वच्छता परिसंपत्तियों की स्थिति के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान अधिकारी-कर्मचारियों के अलावा ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव तथा स्वच्छाग्राही दीदीयों के अलावा ग्रामीणजन उपस्थित थे।

तीजा की लुगरा 2 परिवारिक मनोरंजक छत्तीसगढ़ी फिल्म को दर्शकों ने पसंद किया

रायपुर। प्रदेश में आज रिलीज हुई छत्तीसगढ़ी फीचर फिल्म तीजा के लुगरा 2 के पहले शो में दर्शकों ने भरपूर प्यार दुलार दिया । फिल्म के संवादों पर तालियां भी बजी, कर्णप्रिय गानों में डांस भी किया साथ ही सभी कलाकारों के अभिनय को दर्शकों ने हाथों हाथ लिया। फिल्म के प्रीमियर शो में फिल्म से जुड़े तमाम कलाकार शामिल हुए और वे जब थिएटर से बाहर निकले हैं तो लोगों ने उन्हें घेर कर सेल्फी ली । दर्शकों का इतना प्यार पाकर अभिनेताओं ने सभी का धन्यवाद दिया। कसी हुई पारिवारिक पटकथा और उम्दा संवादों के साथ भरपूर एक्शन और कमाल का गीत संगीत इस फिल्म को पिछले कुछ महीनो में आई फिल्मों से बेहतर बना दिया है। फिल्म के प्रीमियर में निर्माता निर्देशक मनोज वर्मा, पुष्पेंद्र सिंह, अनुपम वर्मा, पूरन किरी स्वयं अभिनेता करन खान, अभिनेत्री रश्मि देवांगन, रिंकू रज़ा समेत फिल्म के टीम मेंबर उपस्थित रहे।निर्देशक विजय गुमगांवकर एवं निर्माता राजन सूर्यवंशी दशकों से मिले प्यार और दुलार के लिए तीजा के लुगरा 2 की टीम ने सभी का धन्यवाद अदा किया।

केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं का लाभ हर व्यक्ति को मिले, यह सुनिश्चित करें अधिकारी

कांकेर सांसद श्री नाग ने 'दिशा' की बैठक में दिए निर्देश

कांकेर(विश्व परिवार)। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक कांकेर लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री भोजराज नाग की अध्यक्षता में आज जिला पंचायत के सभाकक्ष में आयोजित की गई। इस दौरान उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन का उद्देश्य योजनाओं की पहुंच अंतिम पंक्ति पर मौजूद अंतिम व्यक्ति तक सुनिश्चित हो। इसके लिए सभी अधिकारी पूरी शिद्दत से समन्वित प्रयास करें। सांसद श्री नाग ने आगे कहा कि केन्द्र प्रवर्तित सभी योजनाओं का लाभ हर व्यक्ति को मिले, संबंधित अधिकारी यह अनिवार्यत: सुनिश्चित करें। जिला पंचायत के सभाकक्ष में आयोजित बैठक में सांसद श्री नाग ने कहा कि विभाग के पास उपलब्ध साधनों एवं संसाधनों में बेहतर परिणाम देने का प्रयास करें। जिले के सुदूर क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, परिवहन सहित अन्य आधारभूत सेवाओं विकसित करने में विभागीय अधिकारी ईमानदारीपूर्वक शत-प्रतिशत प्रयास करें। बैठक में जिला पंचायत के तहत संचालित विभिन्न योजनाओं मनरेगा, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, रूर्बन मिशन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सामुदायिक शौचालय निर्माण, प्रधानमंत्री आवास योजना, ग्राम विकास योजना आदि की प्रगति की जानकारी सांसद को दी गई। इसी प्रकार लोक निर्माण विभाग के अधीन सड़क एवं पुल-पुलिया निर्माण, समाज कल्याण विभाग के अधीन राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम के वित्तीय एवं भौतिक लक्ष्य और प्रगति की जानकारी दी गई। इसके अलावा राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के तहत जल जीवन मिशन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, मृदा स्वास्थ्य परीक्षण, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, आत्मा योजना के जिले में क्रियान्वयन एवं प्रगति की जानकारी संबंधित विभाग के अधिकारियों के द्वारा दी गई। इसी तरह नगरीय निकायों में संचालित विभिन्न योजनाओं प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़क मार्ग निर्माण, जल संसाधन विभाग के तहत जल प्रबंधन कार्यक्रम, त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, जल निकायों का नवीनीकरण एवं पुनरूद्धार तथा सतही लघु सिंचाई की जानकारी दी गई। इसके अलावा पशुधन विकास विभाग के अधीन संचालित राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, राष्ट्रीय गोकुल मिशन, महिला एवं बाल विकास के तहत एकीकृत बाल विकास योजना, कुपोषण की स्थिति, भवन निर्माण के आधारभूत जानकारी, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, महिला संरक्षण एवं सुरक्षा योजना की भौतिक प्रगति की जानकारी बैठक में ली गई। इसी तरह स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा मातृत्व स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम, राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम, सिकलसेल एनीमिया उन्मूलन मिशन, आयुष्मान भारत, राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के क्रियान्वयन के बारे जानकारी दी गई। साथ ही डिजिटल इंडिया, स्कूल शिक्षा विभाग के तहत पीएम पोषण शक्ति निर्माण, प्री-पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना, समग्र शिक्षा, पीएमश्री स्कूल विकास की जानकारी बैठक में दी गई।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, शुक्रवार 23 नवंबर 2024

व्यापार समाचार

गोदरेज इंटेरियो ने त्योहारी सीजन में दर्ज की 25प्रतिशत की वृद्धि

मुंबई(एजेंसी)। गोदरेज एंड बॉयस के भारत के अग्रणी होम और ऑफिस फर्नीचर ब्रांड्स में से एक और गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप का हिस्सा, गोदरेज इंटेरियो ने त्योहारी सीजन के दौरान 25त्न की वृद्धि दर्ज की है, ऐसा उपभोक्ताओं की बदलती प्राथमिकताओं और विभिन्न क्षेत्रों में मजबूत मांग के कारण संभव हुआ है। ब्रांड ने सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की, जिसमें उत्तर और मध्य भारत सबसे मजबूत प्रदर्शन करने वाले क्षेत्रों के रूप में उभरे। त्योहारी सीजन में वृद्धि पर टिप्पणी करते हुए, गोदरेज इंटेरियो के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और उपभोक्ता व्यवसाय (क्व2ष्ट) के प्रमुख देव सरकार ने कहा, इस त्योहारी सीजन का प्रदर्शन आधुनिक भारतीय उपभोक्ताओं की उभरती जरूरतों और आकांक्षाओं के बारे में हमारी गहरी समझ को दर्शाता है। विभिन्न क्षेत्रों में मजबूत वृद्धि अपमोड्स रेंज जैसे उत्पादों के साथ वैयक्तिकरण और मॉड्यूलरिटी सहित डिजाइन-आधारित नवाचार पर हमारे रणनीतिक फोकस को मान्य करती है, और नवीनतम तकनीक का उपयोग करके बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करती है। निरंतर गुणवत्ता मानक बनाए रखते हुए एक विशाल उत्पाद रेंज के साथ विविध प्राथमिकताओं को पूरा करने की हमारी क्षमता इस सफलता की कुंजी रही है। चूंकि हम शादी के मौसम में प्रवेश कर रहे हैं, जहां उच्च उपभोक्ता गतिविधि की उम्मीद है, हमें विश्वास है कि हमारे लक्षित पेशकश, एक विस्तारित उत्पाद पोर्टफोलियो और गहरी बाजार पहुंच के साथ मिलकर हमें इस गति को बनाए रखने में सक्षम बनाएंगे। उपभोक्ता रुझानों के अनुरूप रहकर, हमारा लक्ष्य स्थानों को फिर से परिभाषित करना और अपने ग्राहकों के लिए सुखद अनुभव बनाना है।

नियमित रूप से बादाम खाने से एक्सरसाइज के बाद रिकवरी बेहतर हो सकती है: शोध

रायपुर, एक नए अध्ययन में पता चला है कि नियमित रूप से बादाम खाने से एक्सरसाइज के बाद दर्द और मांसपेशियों की क्षति को कम करते हुए रिकवरी में मदद मिल सकती है। वहीं मांसपेशी भी अच्छी तरह काम करती हैं। ऐसा खाना जो एक्सरसाइज की वजह से होने वाली मांसपेशियों की थकान और दर्द को कम करते हुए ठीक होने में मदद करते हैं, उससे लोगों को एक्सरसाइज की अपनी दिनचर्या पर कायम रहने में मदद मिल सकती है। ये नए परिणाम वैज्ञानिक प्रमाणों की लगातार बढ़ रही संख्या में शामिल है जिनमें बताया गया है कि एक्सरसाइज के बाद बादाम रिकवरी में कैसे असर दिखाता है। पहले के अध्ययनों में थकान और एक्सरसाइज मेटाबॉलिज्म् पर बादाम के प्रभावों के बारे में पड़ताल की गई। साथ ही बादाम खाने से मांसपेशियों के दर्द और क्षमता पर बादाम खाने के प्रभाव के बारे में पता लगाया गया। डॉ. मार्क केरेन, पीएचडी, आरडी, सैन डिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी में एक्सरसाइज एवं न्यूट्रिशनल साइंसेस के प्रोफेसर ने कहा हमारा अध्ययन फिटनेस रिकवरी में बादाम की मददगार भूमिका पर थोड़ी और रोशनी डालता है। बादाम में काफी सारे पोषक तत्व होते हैं, जिन्हें हम एक्सरसाइज रिकवरी में मददगार मानते हैं। उनमें शामिल हैं प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइटोन्यूट्रिएंट्स। इन पोषक तत्वों को पूरे फूड पैकेज के रूप में दिया जाता है, ना कि विटामिन सप्लीमेंट के रूप में जोकि इस अध्ययन में बादाम के पाए गए फायदों में अपना योगदान दे सकता है।'

देश की सबसे स्मार्ट टाउनशिप में घर का सपना हो सकेगा पूरा

ग्रेटर नोएडा(एजेंसी) । दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर के अंतर्गत देश की सबसे स्मार्ट टाउनशिप में से एक इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल टाउनशिप में रहने का सपना जल्द पूरा हो सकेगा। आईआईटीजीएनएल की ग्रुप हाउसिंग भूखंड योजना जल्द लॉन्च हो सकेगी। आईआईटीजीएनएल की सोमवार को संपन्न बोर्ड बैठक में 2024-25 की भू आवंटन की दरें तय हो चुकी हैं। अब स्कीम लॉन्च करने के निर्देश दिए गए हैं। दरअसल, आईटीजीएनएल की तरफ से बिल्डर भूखंडों की स्कीम लॉन्च करने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है, लेकिन ई-ऑक्शन के लिए रिजर्व प्राइस तय न होने के कारण रुकी थी। आईटीजीएनएल की बोर्ड बैठक सोमवार को संपन्न हुई, जिसमें रेट पर मुहर लग गई। इस टाउनशिप में 44,400 रुपए प्रति वर्ग मीटर रिजर्व प्राइस तय किया गया है। इसके साथ ही अब यह स्कीम भी शीघ्र लॉन्च होने जा रही है। देश की सबसे स्मार्ट टाउनशिप होने के चलते यहां पर पहले से ही एनसीआर एवं देश के कई बड़े बिल्डर ग्रुप हाउसिंग में निवेश करने की इच्छा जता चुके हैं।

रूस-यूक्रेन के बीच बढ़ते तनाव का असर भारतीय शेयर बाजार पर भी लाल निशान में खुला सेंसेक्स

मुंबई(एजेंसी)। रूस-यूक्रेन के बीच बढ़ते तनाव का असर भारतीय शेयर बाजार पर दिखा। गुरुवार को भारतीय शेयर बाजार लाल निशान में खुला। शुरुआती कारोबार में पीएसयू बैंक सेक्टर में भारी बिकवाली देखी गई। निफ्टी पीएसयू बैंक में 4 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई। शुरुआती कारोबार में सुबह 9ः43 बजे सेंसेक्स 610.10 अंक या 0.79 प्रतिशत की गिरावट के बाद 76,968.28 पर कारोबार कर रहा था। निफ्टी 209.65 अंक या 0.89 प्रतिशत की गिरावट के बाद 23,308.85 पर कारोबार कर रहा था। बाजार का रुख नकारात्मक रहा। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर 445 शेयर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 1560 शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। निफ्टी बैंक 397.10 अंक या 0.78 प्रतिशत की गिरावट के बाद 50,299.40 पर था। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 170.40 अंक या 0.31 प्रतिशत की गिरावट के बाद 54,377.85 पर कारोबार कर रहा था। निफ्टी स्मॉल कैप 100 इंडेक्स 94.50 अंक या 0.53 प्रतिशत की गिरावट के बाद 17,582.85 पर था। सेंसेक्स पैक में एसबीआई, इंडसइंड बैंक, एनटीपीसी, एशियन पेंट्स, आईटीसी, टाटा मोटर्स, एलएंडटी और नेस्ले इंडिया टॉप लूजर्स रहे। वहीं, इंफोसिस, टीसीएस, एचसीएल टेक, एचडीएफसी बैंक और टेक महिंद्रा टॉप गेनर्स रहे। जानकारों का कहना है कि यूक्रेन-रूस के बीच जारी जंग के हालात और बदतर हो रहे हैं और ये बाजार को प्रभावित कर सकता है।

भारतीय टीम न्यूजीलैंड से घरेलू सीरीज में हार का कोई बोझ नहीं उठा रही है : बुमराह

पर्थ(एजेंसी)। कार्यवाहक कप्तान जसप्रीत बुमराह ने कहा है कि भारतीय टीम पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पूरे आत्मविश्वास के साथ उतरेगी और पिछले महीने न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में हार का कोई बोझ नहीं उठा रही है। भारत ऑस्ट्रेलिया का सामना करने की तैयारी कर रहा है, लेकिन न्यूजीलैंड सीरीज में हाल ही में मिली हार ने जटिलताएं बढ़ा दी हैं। टीम को कीवी टीम के हाथों 3-0 से क्लीन स्वीप का सामना करना पड़ा, जिसमें वानखेड़े स्टेडियम में 25 रन से हार भी शामिल है। यह 2000 के बाद से घरेलू टेस्ट सीरीज में भारत की पहली क्लीन स्वीप हार और तीन या उससे अधिक मैचों की सीरीज में उनकी पहली हार थी। भारत पांच मैचों की सीरीज में एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ उतरेगाः चार मैच जीतना और लगातार तीसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचना। बुमराह ने मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, जब आप जीतते हैं, तो आप शून्य से शुरुआत करते हैं, लेकिन जब आप हारते हैं, तो भी आप शून्य से शुरुआत करते हैं। हम भारत से कोई बोझ नहीं उठा रहे हैं। हां, हमने न्यूजीलैंड सीरीज से कुछ सीखा है, लेकिन वहां परिस्थितियां अलग थीं और यहां हमारे नतीजे अलग रहे हैं। नियमित कप्तान रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में टीम की अगुआई करने वाले बुमराह ने आगे कहा, हमने अपनी प्लेइंग इलेवन को अंतिम रूप दे दिया है और आपको कल सुबह मैच शुरू होने से पहले पता चल जाएगा। भारतीय तेज गेंदबाज ने ऑस्ट्रेलिया में अपने ऐतिहासिक प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन की ओर इशारा करते हुए टीम की तैयारियों पर भी भरोसा जताया। पर्थ की पिच, जो अपनी उछाल और गति के लिए जानी जाती है, गेंदबाजों के अनुकूल होने की उम्मीद है, जो श्रृंखला के शुरुआती मुकाबले में एक दिलचस्प मोड़ लाएगी। पहला टेस्ट 22 नवंबर को पर्थ में शुरू होगा। एडिलेड 6 दिसंबर से शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट की मेजबानी करेगा, इसके बाद 14 दिसंबर को ब्रिसबेन होगा। बॉक्सिंग डे टेस्ट 26 दिसंबर को मेलबर्न में होगा और पांचवां अंतिम टेस्ट 3 जनवरी, 2025 को सिडनी में शुरू होगा। यह पहली बार होगा जब भारत और ऑस्ट्रेलिया पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेंगे। न्यूजीलैंड के खिलाफ हाल ही में मिली हार के बाद आगामी सीरीज भारत की विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की उम्मीदों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत का अंक प्रतिशत वर्तमान में 58.33 प्रतिशत है और वह तालिका में शीर्ष पर चल रही ऑस्ट्रेलिया से पीछे है। लगातार तीसरे डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए क्वालीफाई करने की अपनी संभावनाओं को मजबूत करने के लिए, भारत को पांच में से कम से कम चार टेस्ट जीतने होंगे।

केएल राहुल नहीं ऋषभ पंत पर 25 करोड़ खर्च करेगी आरसीबी, हो गया बड़ा खुलासा

नईदिल्ली(एजेंसी)। 24 और 25 नवंबर को होने वाले आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन की तैयारियां जोरों-शोरों से चल रही हैं. क्रिकेट के गलियारों में इसी की चर्चा है. इस बीच मिस्टर आईपीएल के नाम से मशहूर रहे सुरेश रैना ने बताया है कि रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु 25 करोड़ रुपये में एक खिलाड़ी को खरीदने की तैयारी में है, क्योंकि टीम के पर्स में 83 करोड़ रुपये बचे हुए हैं. आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में इस बार एक दो नहीं बल्कि 12 मार्की प्लेयर्स शामिल हुए हैं. लिस्ट में ऋषभ पंत, केएल राहुल, श्रेयस अय्यर जैसे कई भारतीय स्टार्स भी शामिल हैं. इस बीच पूर्व भारतीय क्रिकेटर और मिस्टर आईपीएल के नाम से पहचाने जाने वाले सुरेश रैना ने ऋषभ पंत को लेकर बड़ी भविष्यवाणी कर दी है. उन्होंने बताया कि पंत को 25 करोड़ रुपये मिल सकते हैं. इतना ही नहीं उन्होंने ये भी कहा है कि यदि रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु उन्हें खरीददती है, तो इसमें हैरानी नहीं होगी. रैना ने कहा, ऋषभ पंत दिल्ली के कप्तान रहे हैं, तूफानी बल्लेबाज हैं और टॉप विकेटकीपर भी हैं. अगर आप उनकी ब्रांड वैल्यू पर नजर डालें तो स्पॉन्सरशिप के नजरिए से फायदेमंद रह सकते हैं. मुझे लगता है कि उन्हें 25-30 करोड़ रुपये मिलने चाहिए. मेरे लिए यह कोई चौंकाने वाली बात नहीं होगी अगर आरसीबी पंत को खरीद लेती है, जिसके पास 83 करोड़ रुपये बचे हुए हैं. रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु ने आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन से पहले 3 खिलाड़ियों को रिटेन किया. इसमें विराट कोहली, यश दयाल और रजत पाटीदार का नाम शामिल है.

छत्तीसगढ़ के भिलाई में स्थित बीएसपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने जीता टीसीएस रूरल आईटी क्विज़ नेशनल फाइनल 2024

भिलाई। आईटी सेवा, परामर्श और व्यावसायिक समाधान के लिहाज़ से वैश्विक स्तर पर अग्रणी समूह, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) (बीएसई: 532540, एनएसई: टीसीएस) ने कर्नाटक सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, बीटी और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से टीसीएस रूरल आईटी क्विज़ के 25वें संस्करण के विजेताओं की घोषणा की। क्विज़ का यह राष्ट्रीय फाइनल, 21 नवंबर, 2024 को बेंगलुरु टेक समिट के अंग के रूप में आयोजित किया गया था। छत्तीसगढ़ के भिलाई में स्थित बीएसपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के तनिश कुमार साहू (14 वर्ष) राष्ट्रीय फाइनल चैंपियन के रूप में उभरे, जबकि राजस्थान के सूरतगढ़ में स्थित स्वामी विवेकानंद सरकारी मॉडल स्कूल के एकलव्य (14 वर्ष) ने इस प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया। टीसीएस ने दोनों छात्रों को क्रमश: 100,000 रुपये और 50,000 रुपये की शैक्षिक छात्रवृत्ति से सम्मानित किया। गुजरात के आणंद में स्थित आनंदालय स्कूल के स्मरण सुथार और महाराष्ट्र के वर्धा स्थित सेंट जॉन्स हाई स्कूल के शिवम एम ठाकरे संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर रहे। सभी फाइनलिस्ट को टीसीएस की ओर से 10,000 रुपये की छात्रवृत्ति भी मिली। इस साल यह क्विज़ अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रहा है और इसमें भारत के छोटे शहरों से 5.6 लाख से अधिक छात्रों ने भाग लिया। कक्षा 8 से 12 तक के छात्रों के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में ऑनलाइन टेस्ट, वर्चुअल राउंड और फिज़िकल क्विज़ प्रतियोगिताएं शामिल थीं। राष्ट्रीय फाइनल में पांच आकर्षक खंडों के ज़रिये छात्रों के प्रौद्योगिकी ज्ञान का मूल्यांकन किया गया। राष्ट्रीय फाइनल के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले दस क्षेत्रीय फाइनलिस्ट में शामिल थे:

कार्यालय अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग, रायपुर मण्डल क्रमांक 1 (छत्तीसगढ़)
निविदा सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है :-

एन.आई.टी. क्र./ सिस्टम टेण्डर नं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत रु. (लाख में)
1	2	3
17/161326	Collection of Material on Various Road & Building Under Construction Sub Dn. No. 1 Atal Nagar Nava Raipur (C.G.) (द्वितीय आमंत्रण)	रु. 30.00 लाख
179/161330	WHITE WASHING, COLOUR WASHING AND PAINTING IN MINISTER BUNGALOW AT SECTOR-24 UNDER SUB DIVISION NO. 03 (DIVISION NO 03 NAWA RAIPUR ATAL NAGAR (प्रथम आमंत्रण)	रु. 24.96 लाख
177/161325	ROAD MARKING, SIGN BOARD, RPM AT VARIOUS ROAD & ROAD DIVIDER UNDER SUB DIVISION NO. -3 RAIPUR (C.G.) (प्रथम आमंत्रण)	रु. 80.00 लाख
178/161329	MOW WORK OF HONOURABLE MINISTER'S BUNGALOW (03 Nos.) AT SECTOR 24 NAYA RAIPUR, DISTT- RAIPUR (C.G.) (प्रथम आमंत्रण)	रु. 106.34 लाख

एन.आई.टी. क्र. 17 सिस्टम टेन्डर नं. 161326 डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 04.12.2024 समय सायं 5:30 बजे तक एवं एन.आई.टी. क्र. 179 सिस्टम टेन्डर नं. 161330, एन.आई.टी. क्र. 177 सिस्टम टेन्डर नं. 161325 एवं एन.आई.टी. क्र. 178 सिस्टम टेन्डर नं. 161329 डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 09.12.2024 समय सायं 5:30 बजे तक

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी https://eproc.cgstate.gov.in पर देखी जा सकती है एवं डाउनलोड की जा सकती है.

अधीक्षण अभियंता
G-242503939/1 लो.नि.वि., मंडल क्र.-1, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय वनमण्डलाधिकारी, धमतरी वनमण्डल, धमतरी (छत्तीसगढ़)
☎ 07722-238371(O), 236137(Fax), E-mail – dfo-dhamtari.cg@gov.in

संक्षिप्त निविदा सूचना

निविदा विज्ञप्ति क्रमांक/5617 धमतरी, दिनांक: 20 /11/2024

अपलेखित शासकीय वाहन तथा अंतिम रूप से राजसात वाहनों के विक्रय हेतु संक्षिप्त विज्ञापन

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि धमतरी वनमण्डल धमतरी अंतर्गत अपलेखित शासकीय वाहन (05 बोलेरो) एवं अंतिम रूप से राजसात वाहन (02 मोटर सायकल) का निविदा विक्रय द्वारा जहॉ है जैसी है की स्थिति में निर्वर्तन हेतु सीलबंद निविदा आमंत्रित किया जाता है। जिस हेतु विस्तृत निविदा प्रपत्र एवं आवश्यक शर्तें अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में 500.00 रू. का डिमांड ड्राफ्ट या नगद शुल्क जो वनमण्डलाधिकारी धमतरी वनमण्डल धमतरी के पक्ष में देय हो जमा कर पूर्ण आवेदन के साथ प्रस्तुत करने पर दिनांक 25.11.2024 से कार्यालयीन दिवस में प्राप्त किया जा सकता है। कृपया निविदा के पूर्व वाहनों का स्वतः स्थल निरीक्षण कर लेवें। निविदा विक्रय की शर्तें एवं अन्य जानकारी कार्यालयीन दिवस व समय पर वनमण्डल कार्यालय धमतरी से प्राप्त की जा सकती है।

निविदा दिनांक 25.11.2024 को प्रथम चक्र की निविदा, दिनांक 12.12.2024 को व्दितीय चक्र की निविदा एवं दिनांक 19.12.2024 को तृतीय चक्र की निविदा आमंत्रित की जाती है। प्रथम बार में निविदा किसी कारण वश असफल होने पर द्वितीय निविदा की जावेगी। इसी प्रकार द्वितीय निविदा भी किसी कारणवश असफल होने पर तृतीय निविदा किया जावेगा।

क्र.	विवरण	निविदा हेतु समय सारिणी	द्वितीय निविदा हेतु समय सारिणी	तृतीय निविदा हेतु समय सारिणी
01	निविदा फार्म बिक्री प्रारंभ की तिथि	25.11.2024 पूर्वान्ह 11:00 बजे से	12.12.2024 पूर्वान्ह 11:00 बजे से	19.12.2024 पूर्वान्ह 11:00 बजे से
02	निविदा फार्म बिक्री की अंतिम तिथि	07.12.2024 अपरान्ह 5:00 बजे तक	15.12.2024 अपरान्ह 5:00 बजे तक	22.12.2024 अपरान्ह 5:00 बजे तक
03	निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तिथि	08.12.2024 अपरान्ह 2:00 बजे तक	16.12.2024 अपरान्ह 2:00 बजे तक	23.12.2024 अपरान्ह 2:00 बजे तक
04	निविदा खोलने की तिथि	08.12.2024 अपरान्ह 4:00 बजे तक	16.12.2024 अपरान्ह 4:00 बजे तक	23.12.2024 अपरान्ह 4:00 बजे तक
05	निविदा खोलने का स्थान	वनमण्डल कार्यालय धमतरी	वनमण्डल कार्यालय धमतरी	वनमण्डल कार्यालय धमतरी

G-242503959/1

वनमंडलाधिकारी
धमतरी वनमंडल धमतरी

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 23 नवम्बर 2024

सुंगेरा एनीकट निर्माण के लिए 9 करोड़ से अधिक रुपये स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन ने बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के विकासखंड तिल्दा की कोल्हान नाले पर सुंगेरा एनीकट के निर्माण के लिए नौ करोड़ चार लाख 14 हजार रुपये स्वीकृत किये हैं। योजना के कोर्यों के निर्माण हो जाने पर क्षेत्रीय किसानों को निस्तारी, पेयजल, भू-जल संवर्धन आवागमन एवं कृषकों को निजी पम्प के माध्यम से करीब 80 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा मिलेगी। जल संसाधन विभाग मंत्रालय महानदी भवन से मुख्य अभियंता महानदी गोदावरी कछार जल संसाधन विभाग रायपुर को एनीकट का निर्माण कराने प्रशासकीय स्वीकृति जारी की है।

संक्षिप्त समाचार

रायपुर रेल मंडल के लखोली-रायपुर रेल खंड के बीच तीन पुराने ब्रिज के कायाकल्प का कार्य, कई गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के लखोली- रायपुर रेल खंड के बीच तीन पुराने ब्रिज के कायाकल्प का कार्य सहित अनेक कार्यो किया जाएगा ! इस कार्यों के फलस्वरूप कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगी ! जिसकी जानकारी इस प्रकार हैं- **रद्द होने वाली गाड़ियों**- दिनांक 25 नवम्बर, 02 एवं 09 दिसम्बर, 2024 को टिटलागढ़ से चलने वाली 08277 टिटलागढ़ -रायपुर स्पेशल रद्द रहेगी। 26 नवम्बर, 03 एवं 10 दिसम्बर, 2024 को रायपुर से चलने वाली 08278 रायपुर-टिटलागढ़ स्पेशल रद्द रहेगी। 25 नवम्बर, 02 एवं 09 दिसम्बर, 2024 को विशाखापटनम से चलने वाली 08528 विशाखापटनम-रईउर स्पेशल रद्द रहेगी। 26 नवम्बर, 03 एवं 10 दिसम्बर, 2024 तक रायपुर से चलने वाली 08527 रायपुर-विशाखापटनम स्पेशल रद्द रहेगी। **देरी से रवाना होने वाली गाड़ियां**- दिनांक 25 नवम्बर, 02 एवं 09 दिसम्बर, 2024 को विशाखापटनम से चलने वाली 18530 विशाखापटनम -दुर्ग एक्सप्रेस 03 घंटे देरी से रवाना होगी।

पंखाजूर क्षेत्र के किसानों को मिलेगी बेहतर सिंचाई सुविधा: जल संसाधन मंत्री केदार कश्यप

रायपुर (विश्व परिवार)। कांकेर जिले के पखांजूर क्षेत्र के किसानों को परलकोट जलाशय से अब भरपूर पानी मिलेगा। जल संसाधन मंत्री श्री केदार कश्यप ने इस जलाशय के संधारण कार्य का भूमिपूजन किया। यह कार्य लगभग 31 करोड़ रूपए की लागत से पूर्ण होगा। परलकोट जलाशय में आर.बी.सी. एवं एल.बी.सी. गेट की मरम्मत तथा आरबीसी. नहर आर.डी. 14 किलोमीटर तक लाइनिंग कार्य एवं ट्रफ निर्माण कार्य किया जाएगा। भूमिपूजन के मौके पर जल संसाधन मंत्री श्री कश्यप ने 07 करोड़ रूपए की लागत से बारदा आश्रम एनीकट निर्माण और परलकोट जलाशय की बायीं तट पर मुख्य नहर निर्माण हेतु 15 करोड़ रूपए की घोषणा की। इस अवसर पर कार्यक्रम में अंतागढ़ विधायक श्री विक्रम उसेण्डी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि परलकोट जलाशय से वर्तमान में 5400 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती है, जबकि संधारण कार्य पूर्ण हो जाने से 9000 हेक्टेयर में सिंचाई सुविधा मिलेगी। संधारण कार्य के बाद 3600 हेक्टेयर सिंचाई क्षेत्र में वृद्धि होगी, जिससे पखांजूर क्षेत्र के 67 ग्रामों में निवासरत 15 हजार से अधिक किसानों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। जल संसाधन मंत्री श्री कश्यप ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य का लगभग 37 से 40 प्रतिशत मछली का उत्पादन इसी क्षेत्र से होता है। इसका ज्वलंत उदाहरण है कि जिले को मत्स्यपालन के क्षेत्र में कल 21 नवम्बर को देश में 'बेस्ट इनलैंड डिस्ट्रिक्ट अवार्ड' से नवाजा गया है। केबिनेट मंत्री ने आगे कहा कि इस क्षेत्र में एकीकृत खेती के अलावा बत्तख पालन, मछली पालन, सूअर पालन, बकरा पालन, मुर्गा पालन, दुग्ध उत्पादन आदि के लिए उन्नत तकनीकी का उपयोग किया जाता है।

संसद की स्थाई समिति में बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021 विधेयक पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने दिए सुझाव

नई दिल्ली/रायपुर (विश्व परिवार)। शुक्रवार को नई दिल्ली में संसद की शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, युवा एवं खेल की स्थाई समिति की महत्वपूर्ण बैठक हुई। इस बैठक में बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021 को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने समिति की बैठक में अपने भी सुझाव दिए, जो समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाने वाले हैं। उनका कहना कि किशोरियों की समय से पहले शादी रोकने के लिए उन्हें शिक्षित करना और कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक है, जो एक दूरगामी दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों में गर्ल्स हॉस्टल के निर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया, क्योंकि रहने की उचित व्यवस्था न होने के कारण कई लड़कियां पढ़ाई छोड़ देती हैं, और माता-पिता उनकी कम उम्र में ही शादी कर देते हैं। इसके साथ ही, श्री अग्रवाल ने महिलाओं के खिलाफ अपराधों को रोकने के लिए हर पुलिस थाने में महिला डेस्क और जिलास्तर पर महिला थाना खोलने का सुझाव दिया। उन्होंने यह भी कहा कि, एससी/एसटी मामलों में जैसे विशेष अधिकारी नियुक्त होते हैं, वैसे ही महिलाओं के लिए भी विशेष अधिकारियों की नियुक्ति होनी चाहिए, ताकि

- **सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने की आदिवासी/पिछड़े क्षेत्रों में गर्ल्स हॉस्टल खोलने की मांग**
- **थाने में महिला डेस्क, जिला स्तर पर महिला थाने से महिलाओं में आएगी सुरक्षा की भावना : बृजमोहन अग्रवाल**

अपराधों पर रोक लगाई जा सके और उन्हें त्वरित न्याय मिल सके। जो न केवल महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे बल्कि समाज में लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देगा।

बैठक में सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, नेशनल कोलिशन एडवोकेटिंग फॉर एडोलसेंट कन्सर्न (एनसीएएसी), और युवा आवाज अभियान, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (सीएआरए), राष्ट्रीय लोक सहयोग एवं बाल विकास संस्थान के अधिकारियों व प्रतिनिधियों ने विधेयक पर अपने विचार साझा किए।

इस विधेयक के माध्यम से लड़कियों की शादी की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 वर्ष करने का प्रस्ताव रखा गया है। यह कदम महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उठाया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के अधिक अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने जीवन में स्वावलंबी और सशक्त बन सकें।

सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि यह विधेयक समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बनेगा। लड़कियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता के लिए अधिक समय और अवसर प्राप्त होंगे। यह केवल एक कानूनी बदलाव नहीं है, बल्कि समाज को नई दिशा देने वाला एक ऐतिहासिक कदम है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में यह विधेयक बालिकाओं को समान अधिकार देने और उनकी उन्नति के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह कदम न केवल भारत को एक सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र बनाएगा, बल्कि समाज में जड़ जमा चुकी असमानताओं को भी दूर करने में सहायक होगा।

मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ सीमेंट ट्रांसपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आयोजित दीपावली मिलन समारोह में हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय विगत दिवस राजधानी रायपुर के होटल अंबेसिया में छत्तीसगढ़ सीमेंट ट्रांसपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आयोजित दीपावली मिलन समारोह में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री श्री साय ने इस मौके पर कहा कि आप सभी ने बहुत सुंदर आयोजन किया है। आप सभी अपने परिवार जनों के साथ आए हैं, मैं सभी को शुभकामनाएं देता हूं।

मुख्यमंत्री ने द साबरमती रिपोर्ट फिल्म का जिक्र करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में इस फिल्म को हमने टैक्स फ्री कर दिया है और अभी मैंने मंत्री गणों और विधायकों के साथ इस फिल्म को देखा है। इस फिल्म में गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस में हुई घटना को बहुत सुंदर ढंग से फिल्माया गया है। मुख्यमंत्री ने सभी से आग्रह किया कि वे इस फिल्म को जरूर देखें। साथ ही इस फिल्म के संदर्भ में कहा कि सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमेंट ट्रांसपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहा है। सीमेंट के सुचारू परिवहन से अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। अधोसंरचनाओं का निर्माण हम समय पर पूरा कर पाते है। उन्होंने छत्तीसगढ़ सीमेंट ट्रांसपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन के कार्यों की सराहना की।

अखिल भारतीय विद्युत लॉन टेनिस स्पर्धा का आगाज आज

रायपुर (विश्व परिवार)। 46वीं अखिल भारतीय विद्युत लॉन टेनिस स्पर्धा का आगाज 23 नवंबर को होगा। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज की केंद्रीय क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक समिति इसकी मेजबानी कर रही है। इसमें विभिन्न प्रदेशों की विद्युत कंपनियों की नौ टीमें हिस्सा लेंगी। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव 25 नवंबर को समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार वितरित करेंगे। स्पर्धा का उद्घाटन समारोह कल 23 नवंबर को 11:30 बजे छछानपैरी स्थित एपीआईसीईएम टेनिस कोर्ट में होगा।

ओलंपियन हॉकी खिलाड़ी दानिश मुजतबा भी आये

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर जनरेशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री एसके कटियार होंगे तथा प्रबंध निदेशकगण श्री राजेश कुमार शुक्ला एवं श्री भीमसिंह कंवर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। समापन समारोह 25 नवंबर को दोपहर 2.30 बजे होगा, जिसमें मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव होंगे। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में प्रबंध निदेशकगण श्री राजेश कुमार शुक्ला एवं श्री भीमसिंह कंवर उपस्थित रहेंगे। इस स्पर्धा में शामिल होने के लिए छत्तीसगढ़ सहित आंध्रप्रदेश, असम, कर्नाकट, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कोलकाता, तेलंगाना राज्य से विद्युत कंपनियों की टीमें शामिल होंगी।

उत्तरप्रदेश पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड में खेल अधिकारी के पद पर काम करते हुए श्री दानिश मुजतबा को दो बार भारतीय ओलम्पिक हॉकी टीम में खेलने का मौका मिला। वे यूपी की टीम के मैनेजर बन कर आये है।

आयुक्त अबिनाश मिश्रा ने जोन-10 में पार्षदों के साथ चर्चा की, अप्रारंभ प्रगतिरत विकास कार्यो की जानकारी लेकर समीक्षा की

- **सभी विकास कार्यों को मॉनिटरिंग कर समय सीमा में गुणवत्ता सहित पूर्ण करने निर्देश दिये**

रायपुर (विश्व परिवार)। आज नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त अबिनाश मिश्रा ने नगर पालिक निगम जोन 10 कार्यालय पहुंचकर वहां जोन अध्यक्ष आकाशदीप शर्मा, एमआईसी सदस्य श्री सहदेव व्यवहार, पार्षद शीतल कुलदीप बोगा, श्रीमती संध्या नानू ठाकुर, सीमा विष्णु बारले, उमा चंद्रहास निर्मलकर, रवि ध्रुव, अपर आयुक्त विनोद पाण्डेय, मुख्य अभियंता यू.के. धलेन्द्र, अधीक्षण अभियंता राजेश राठौर, जोन कमिश्नर राकेश शर्मा, कार्यपालन अभियंता आशीष शुक्ला, श्री दिनेश सिन्हा सहित जोन अधिकारियों की उपस्थिति में जोन के वार्डो में अप्रारंभ विकास कार्यों की कारण सहित जानकारी ली एवं प्रगतिरत विकास कार्यो की वार्डवार जानकारी लेकर समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश दिये।

आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा ने जोन अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रगतिरत सभी विकास कार्यो को तय समय सीमा के भीतर गुणवत्ता पूर्ण तरीके से सतत मॉनिटरिंग कर पूर्ण करवाना सुनिश्चित करें और साथ हीअप्रारम्भ किन्तु स्वीकृत विकास कार्यों को तत्काल प्रारम्भ करवाया जाना सुनिश्चित किया जाये। आयुक्त ने जोन अध्यक्ष एवं वार्ड पार्षदों से वार्डो में विकास कार्य एवं अन्य विषयों पर चर्चा की। पार्षदों से विकास कार्यों के सम्बन्ध में सुझाव प्राप्त किये।

आयुक्त ने जोन अधिकारियों को जोन के वार्डों में रिक्त शासकीय भूमियों को सुरक्षित कर उनमें जनहित में योजना प्रस्तावित करने के निर्देश दिए हैं, वहीं नगर निगम हित में राजस्व वसूली अभियान प्रतिदिन वार्डो में तेज गति से चलाकर निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप शत प्रतिशत राजस्व वसूली सर्वोच्च प्राथमिकता देकर सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। आयुक्त ने निगम हित में जोन के वार्डो में राजीनामा प्रकरणों को तैयार करने कार्यवाही करने के निर्देष दिये।

ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक प्रगति के लक्ष्य के साथ बैंक ऑफ बड़ौदा क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर द्वारा 'बड़ौदा किसान पखवाड़ा (11.11.2024 से 22.11.2024) ' के अवसर पर किसान मेला का आयोजन किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। बैंक ऑफ बड़ौदा रायपुर क्षेत्र द्वारा किसानों से जुड़ाव के लिए तैयार किए गए कार्यक्रम, 'बड़ौदा किसान पखवाड़ा' के सातवाँ संस्करण का शुभारंभ दिनांक 11.11.2024 को किया गया. इस कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों से संपर्क के लिए विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ ज्ञान श्रृंखला एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अखिल भारतीय पहल का समापन 22.11.2024 को हो गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न माध्यमों से बड़ी संख्या में किसान लाभान्वित हुए.

इस क्रम में बैंक ने दिनांक 20.11.2024 को तिलदा विकासखंड , रायपुर जिले में वृहद किसान मेला का आयोजन किया गया. बड़ौदा किसान पखवाड़ा के कार्यक्रम (जिसमें चौपाल, किसान मेला पशु एवं किसानों के लिए स्वास्थ्य शिविर शामिल हैं) आयोजित किए गए.

उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विवेक गोस्वामी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) जनपद पंचायत तिलदा, एवं विशिष्ट अतिथि श्री भरतकुमार चावड़ा, उप महाप्रबंधक (व्यवसाय विकास), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, रायपुर अंचल थे.

इसके साथ-साथ श्री किसलय प्रसाद, सहायक महाप्रबंधक व क्षेत्रीय प्रमुख, रायपुर क्षेत्र, श्री सिराज हाईट,अग्रणी जिला प्रबंधक और श्री अरूप रॉय, तिलदा शाखा प्रबंधक उपस्थित रहें. किसान मेले में आस पास के गांव के सरपंच सहित 500 से अधिक किसानों ने भाग लिया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विवेक गोस्वामी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) जनपद पंचायत तिलदा ने किसानों को उनकी महत्व की बातें बताते हुए उनका मार्गदर्शन भी किया. बैंक ऑफ बड़ौदा की ओर से विशिष्ट अथिति श्री भरतकुमार चावड़ा , उप महाप्रबंधक (व्यवसाय विकास), रायपुर अंचल द्वारा सभी किसानों को फसल बीमा योजना, सामाजिक सुरक्षा योजना, बैंक के इतिहास और कृषकों के साथ बैंक का जुड़ाव, आधुनिक युग मे डिजिटल बैंकिंग के महत्व पर प्रकाश डाला गया.

क्षेत्रीय प्रमुख श्री किसलय प्रसाद द्वारा आधुनिक खेती के बारे में विस्तृत्त जानकारी प्रदान की गई, उन्होंने बताया कि किस तरह से किसान पारंपरिक एवं सीजनल खेती पर निर्भर ना रहकर आधुनिक कृषि तकनीक एवं कृषि उत्पादों में मूल्य संवर्धन कर अपने आपको खुशहाल एवं संपन्न बना सकता है. उन्होंने बताया कि बैंक सदैव ही कृषक हित में अग्रणी रहा है और आगे भी रहेगा. किसान मेले में किसानों को महिला समूह, ट्रेक्टर ऋण एवं कृषि ऋण के अंतर्गत लाभार्थी को 3.80 करोड़ के ऋण का वितरण किया गया.

उप मुख्यमंत्री साव बेमेतरा और बिलासपुर में विभिन्न कार्यक्रमों में होंगे शामिल

बिलासपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव 23 नवम्बर को बेमेतरा और बिलासपुर में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। वे 23 नवम्बर को सवेरे साढ़े दस बजे बिलासपुर से सड़क मार्ग द्वारा बेमेतरा के लिए रवाना होंगे। वे दोपहर सवा 12 बजे बेमेतरा में श्रीराम एकेडमी का शुभारंभ करेंगे। वे दोपहर साढ़े 12 बजे श्रीराम एकेडमी से बेमेतरा के टाउन हॉल के लिए प्रस्थान करेंगे। श्री साव दोपहर 12:35 बजे टाउन हाल में बेमेतरा जिला अधिकारी-कर्मचारी प्रकोष्ठ प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल होंगे। वे दोपहर डेढ़ बजे बेमेतरा से बिलासपुर के लिए रवाना होंगे। वे दोपहर तीन बजे वापस बिलासपुर पहुंचेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव 23 नवम्बर को मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के साथ बिलासपुर में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे।

राजधानी रायपुर में होगा आध्यात्मिक ज्ञान का अनूठा संगम- ''अमृत वर्षा''

रायपुर (विश्व परिवार)। ऋषि चैतन्य ट्रस्ट द्वारा अमृत वर्षा कार्यक्रम का आयोजन रायपुर में होने जा रहा है। यह कार्यक्रम 29 नवंबर से 1 दिसंबर 2024 तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम, ग्रेट ईस्टर्न रोड, साइंस कॉलेज के पास, आमानाका, रायपुर में आयोजित होगा। प्रतिदिन शाम 5 बजे से 7 बजे तक चलने वाले इस आयोजन में आध्यात्मिक ज्ञान और आत्मचिंतन के अनमोल मार्गदर्शन का अवसर मिलेगा।

अमृत वर्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मिक शांति, जीवन में ध्यान और संतुलन का महत्व समझाना है। इस आयोजन में परम पूज्या आनंदमूर्ति गुरुमाँ के प्रवचन होंगे, जो जीवन की गूढ़ समस्याओं का समाधान और आत्मज्ञान का मार्ग प्रशस्त करेंगे। यह आयोजन हर उम्र और वर्ग के लोगों के लिए एक दुर्लभ अवसर होगा, जहां वे अपने भीतर की शांति और चेतना को जागृत कर सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोग न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करेंगे, बल्कि आयोजन समिति से जुड़कर इस कार्यक्रम के उद्देश्यों को और गहराई से समझने का मौका भी मिलेगा।

हरियाणा राज्य के गन्नौर शहर में स्थित ऋषि चैतन्य आश्रम के अध्यक्ष परम पूज्या आनन्दमूर्ति गुरुमाँ एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु हैं जो लोगों को अपने जीवन में सुख और शांति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। गुरुमाँ की शिक्षाएं और संदेश लोगों के जीवन को सकारात्मक दिशा में मोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

गुरुमाँ ने लगभग 40 वर्षों से अपने अलौकिक ज्ञान के मोतियों को बाँटने के लिए देश-विदेश में यात्रा की है। उन्होंने अनेक ध्यान शिविरों, प्रज्ञावान प्रवचनों व आत्ममंथन की सरल विधियों के माध्यम से जीवन को एक नवीन आयाम दिया है। गुरुमाँ के सानिध्य में वेदांग, वेदांत व साधना के गूढ़ विषयों पर आश्रम में अध्ययन, गहन चिंतन व मनन भी निरंतर किया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिक विचारधारा, क्रियाशीलता व रचनात्मकता के कारण गुरुमाँ युवाओं के अति प्रिय हैं। युवा शिविरों के माध्यम से गुरुमाँ ने युवाओं की व्यावहारिक समस्याओं पर चर्चा, उनके जीवन में धर्म का सुदृढ़ स्तम्भ स्थापित करना एवं उनकी सृजनात्मक प्रतिभाओं को उभारने का सदैव ही प्रयास किया है। कर्तव्य निर्वाह के इसी उपक्रम में गुरुमाँ ने कन्याभ्रूण हत्या पर नियंत्रण एवं बालिका सशक्तिकरण के लिये वर्ष 1999 में 'मिशन शक्ति 'की स्थापना कर अज्ञान से बालिकाओं को निवृत करने हेतु शिक्षा रूपी शस्त्र से सशक्त बनाया है। पिछले 22 वर्षों में मिशन शक्ति का यह नन्हा-सा पौधा आज लगभग 26 हजार जरूरतमंद बालिकाओं को 12वीं कक्षा तक की आर्थिक सहायता एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर एक विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। विलक्षण व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। ज्ञान की पराकाष्ठा आनन्दमूर्ति गुरुमाँ न केवल करुणा का मूर्त रूप हैं अपितु सम्पूर्णता की परिभाषा हैं।

तीसरी राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद (NEYP)-2025 के लिए पत्रकारिता विश्वविद्यालय के दस विद्यार्थियों का चयन

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर में तीसरी राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद (NEYP)-2025 के लिए विद्यार्थियों के चयन हेतु स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट (SFD) के सहयोग से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के माध्यम से दस विद्यार्थियों का चयन किया गया।

स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट के स्टेट को-कन्वीनर चंचल चौबे ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि आज जलवायु परिवर्तन हमारी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। युवाओं के पास न केवल इसे समझने बल्कि इसे हल करने के लिए कदम उठाने का सामर्थ्य है। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को जागरूक बनाना और पर्यावरण संरक्षण में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।

इस अवसर पर स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट के रायपुर महानगर के संयोजक सूजल गुप्ता ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और बढ़ता प्रदूषण हमें एक बड़े संकट की ओर ले जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए हमें सतर्कता और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट जल, जंगल, जमीन, जन-जानवर के संरक्षण पर विगत कई वर्षों से कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. नरेन्द्र त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि पर्यावरण संरक्षण महज एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपरा का अभिन्न हिस्सा है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे को देखते हुए हमें जागरूकता के साथ-साथ ठोस समाधान की ओर भी ध्यान देना होगा। युवा पीढ़ी इसमें अग्रणी भूमिका निभा सकती है। ऐसे कार्यक्रम छात्रों को न केवल गंभीर मुद्दे को समझने का मौका देते हैं, बल्कि उनके विचारों को मंच प्रदान करते हैं।

चयनित विद्यार्थी के नाम हैं- सुयश साहू, हुनेश्वरी सिन्हा, किरण, स्वाति, सुरेश साहू, खुशबू वर्मा, दीप्ति वर्मा, जानकी वर्मा, अनमोल तिवारी, खुशी।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पंकज नयन पाण्डेय, डॉ. राजेंद्र मोहंती, डॉ. आशुतोष मंडावी, डॉ. नृपेन्द्र शर्मा, शैलेन्द्र खंडेलवाल समेत शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354